تِلْكَ ءَايَٰتُ ٱللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِٱلْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾ * تِلْكَ ٱلرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ
عَلَىٰ بَعْضٍ ۘ مِّنْهُم مَّن كَلَّمَ ٱللَّهُ ۖ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَٰتٍ ۚ وَءَاتَيْنَا عِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَيَّدْنَٰهُ بِرُوحِ ٱلْقُدُسِ ۗ
وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلَ ٱلَّذِينَ مِنۢ بَعْدِهِم مِّنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ ٱلْبَيِّنَٰتُ وَلَٰكِنِ ٱخْتَلَفُوا۟ فَمِنْهُم مَّنْ ءَامَنَ وَمِنْهُم مَّن كَفَرَ ۚ
وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلُوا۟ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَنفِقُوا۟ مِمَّا رَزَقْنَٰكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِىَ
يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَٰعَةٌ ۗ وَٱلْكَٰفِرُونَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٢٥٤﴾ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ ٱلْحَىُّ ٱلْقَيُّومُ ۚ

٢٥٢ - تلك القصة من العبر التى نقصّها عليك بالصدق لتكون أسوة لك ودليلا على صدق رسالتك ، ولتعلم أننا سننصرك كما نصرنا من قبلك من الرسل .

٢٥٣ - هؤلاء الرسل الذين ذكرنا فريقا منهم وقد فضلنا بعضهم على بعض . فمنهم من كلمه الله دون سفير كموسى ، ومنهم من رفعه الله درجات فوق درجاتهم جميعا وهو محمد الذى اختص بعموم الرسالة ، وكمال الشريعة ، وختمه الرسالات . ومنهم عيسى ابن مريم الذى أمددناه بالمعجزات كإحياء الموتى ، وإبراء الأكمه والأبرص وأيدناه بجبريل روح القدس وقد جاء هؤلاء الرسل بالهدى ، ودين الحق ، والبينات الهادية ، وكان مقتضى هذا أن يؤمن الناس جميعا ، ولا يختلفوا ولا يقتتلوا ، ولو شاء الله ألا يقتتل الناس من بعد مجىء الرسل إليهم بالآيات الواضحة الدالة على الحق ما حدث اقتتال ولا اختلاف ، ولكن الله لم يشأ ذلك ، ولهذا اختلفوا ، فمنهم من آمن ومنهم من كفر ، ولو شاء الله ما اقتتلوا ولا اختلفوا بل يكونون جميعا على الحق ، ولكنه يفعل ما يريد لحكمة قدّرها .

٢٥٤ - يا أيها المؤمنون بالله واليوم الآخر أنفقوا بعض مارزقكم الله فى وجوه الخير ، وبادروا بذلك قبل أن يأتى يوم القيامة الذى يكون كله للخير ولا توجد فيه أسباب النزاع ، لا تستطيعون فيه تدارك ما فاتكم فى الدنيا ، ولا ينفع فيه بيع ولا صداقة ولا شفاعة أحد من الناس دون الله ، والكافرون هم الذين يظهر ظلمهم فى ذلك اليوم ، إذ لم يستجيبوا لدعوة الحق ..

252. Эта история из знамений Аллаха. Мы открываем их тебе (о Мухаммад!) как притчу для тебя и свидетельство того, что ты - истинный посланник; и чтобы ты знал, что Мы поможем тебе победить врагов, как помогли предыдущим посланникам. И действительно, ты - один из посланников!

253. Всем посланникам, о которых Мы упомянули, Мы даровали разные качества и преимущества и возвысили в разной степени. С некоторыми, как с Мусой, Аллах говорил непосредственно, некоторых Аллах вознёс степенью выше других, как Мухаммада, которому было ниспослано последнее Божественное Писание (в котором установлен шариат). Среди посланников был Иса, сын Марйам, которому Мы даровали ясные знамения, - воскрешение мёртвых, лечение прокажённых. Мы подкрепили его Духом Святым (Джибрилом). Эти посланники призывали людей к прямому пути Аллаха. И если бы захотел Господь, люди не враждовали бы после ясных знамений посланников Аллаха и не разошлись бы. Но Аллах не захотел этого, и они затеяли раздоры и разошлись И среди них были такие, которые уверовали, и такие, что не веровали. Поистине, Аллах Мудр и делает то, что пожелает.

254. О вы, которые уверовали в Аллаха и в Судный день! Из тех благ, что Аллах даровал вам, расходуйте на благодеяния и делайте это, прежде чем придёт День, в который не будут приняты в защиту за грехи ни дружба, ни заступничество ни от кого, кроме Аллаха. Неверные будут страдальцами, потому что не ответили на призыв следовать по прямому, справедливому пути Аллаха.

لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۗ مَن ذَا ٱلَّذِى يَشْفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ ۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا ۚ
وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾ لَآ إِكْرَاهَ فِى ٱلدِّينِ ۖ قَد تَّبَيَّنَ ٱلرُّشْدُ مِنَ ٱلْغَىِّ ۚ فَمَن يَكْفُرْ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ
ٱسْتَمْسَكَ بِٱلْعُرْوَةِ ٱلْوُثْقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَا ۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٦﴾ ٱللَّهُ وَلِىُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ يُخْرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ
إِلَى ٱلنُّورِ ۖ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَوْلِيَآؤُهُمُ ٱلطَّٰغُوتُ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ ٱلنُّورِ إِلَى ٱلظُّلُمَٰتِ ۗ أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا
خَٰلِدُونَ ﴿٢٥٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِى حَآجَّ إِبْرَٰهِـۧمَ فِى رَبِّهِۦٓ أَنْ ءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ٱلْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ رَبِّىَ ٱلَّذِى يُحْىِۦ
وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا۠ أُحْىِۦ وَأُمِيتُ ۖ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَأْتِى بِٱلشَّمْسِ مِنَ ٱلْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ ٱلْمَغْرِبِ فَبُهِتَ ٱلَّذِى

٢٥٥ – الله هو الذى يستحق أن يُعبد دون سواه ، وهو الباقى القائم على شئون خلقه دائما ، الذى لا يغفل أبدا ، فلا يصيبه فتور ولا نوم ولا مايشبه ذلك لأنه لا يتصف بالنقص فى شىء ، وهو المختص بملك السموات والأرض لا يشاركه فى ذلك أحد ، وبهذا لا يستطيع أى مخلوق كان أن يشفع لأحد إلا بإذن الله ، وهو سبحانه وتعالى ــ محيط بكل شىء عالم بما كان وما سيكون ، ولا يستطيع أحد أن يدرك شيئا من علم الله إلا ماأراد أن يعلم به من يرتضيه ، وسلطانه واسع يشمل السموات والأرض ، ولا يصعب عليه تدبير ذلك لأنه المتعالى عن النقص والعجز ، العظيم بجلاله وسلطانه .

٢٥٦ – لا إجبار لأحد فى الدخول فى الدين ، وقد وضح بالآيات الباهرة طريق الحق ، وطريق الضلال ، فمن اهتدى إلى الإيمان وكفر بكل ما يطغى على العقل ، ويصرفه عن الحق ، فقد استمسك بأوثق سبب يمنعه من التردى فى الضلال كمن تمسك بعروة متينة محكمة الرباط تمنعه من التردى فى هوة ، والله سميع لما تقولون ، عليم بما تفعلون ومجازيكم على أفعالكم(١) .

٢٥٧ – الله متولى شئون المؤمنين وناصرهم يخرجهم من ظلمات الشك والحيرة إلى نور الحق والاطمئنان ، والكافرون بالله تستولى عليهم الشياطين ودعاة الشر والضلال ، فهم يخرجونهم من نور الايمان الذى فطروا عليه والذى وضح بالأدلة والآيات إلى ظلمات الكفر والفساد ، هؤلاء الكافرون هم أهل النار مخلدون فيها .

(١) سبق التعليق عليها من ناحية القانون الدولى عند التعليق على آيات القتال من ١٩٠ – ١٩٥ من هذه السورة .

255. Аллах - нет божества, кроме Него, и только Ему мы должны поклоняться. Аллах - Живой, Сущий и хранит существование всех людей. Его не объемлет ни дремота, ни сон; Он один владеет тем, что в небесах и на земле; и нет Ему равных. Кто заступится за другого перед Ним без Его дозволения? Аллах - слава Ему Всевышнему! - знает всё, что было и что будет. Никто не может постигнуть ничего из Его мудрости и знания, кроме того, что Он дозволит. Трон Аллаха, Его знания и Его власть обширнее небес и земли, и не тяготит Его охрана их. Поистине, Он - Всевышний, Единый и Великий!

256. В религии нет принуждения. Прямой путь истины уже ясен знамениями и отличается от пути заблуждения. Кто верует в Аллаха и отверг веру в идолопоклонство и всё, что отклоняет его от Истины Аллаха, тот уже обрёл надёжную опору, которая сохранит его, чтобы он не упал в бездну неверия в Аллаха. Поистине, Аллах слышит всё, что вы говорите, и знает всё, что вы делаете, и Он наградит вас за всё праведное, что вы вершите!

257. Аллах - Друг верующих, их Сторонник и Защитник. Он выводит их из мрака сомнений и колебаний к Свету истины, религии и покоя. Покровители неверных - идолы, шайтаны и распространители дьявольского зла и заблуждения, которые отклоняют их от Света веры, ясной знамениями, к мраку идолопоклонства и неверия. Эти - обитатели огня, они в нём вечно пребудут!

كَفَرَ ۗ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٥٨﴾ أَوْ كَٱلَّذِى مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْىِۦ هَٰذِهِ
ٱللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۖ فَأَمَاتَهُ ٱللَّهُ مِاْئَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُۥ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَل لَّبِثْتَ مِاْئَةَ عَامٍ
فَٱنظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَٱنظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ ءَايَةً لِّلنَّاسِ ۖ وَٱنظُرْ إِلَى ٱلْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِزُهَا
ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُۥ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ رَبِّ أَرِنِى كَيْفَ تُحْىِ

٢٥٨ - ألم تر إلى من عمى عن أدلة الإيمان وجادل إبراهيم خليل الله فى ألوهية ربه ووحدانيته ، وكيف أخرجه غروره بملكه الذى وهبه ربه من نور الفطرة إلى ظلام الكفر فعندما قال له إبراهيم : إن الله يحيى ويميت بنفخ الروح فى الجسم وإخراجها منه ، قال أنا أحيى وأميت بالعفو والقتل ، فقال إبراهيم ليقطع مجادلته : إن الله يأتى بالشمس من المشرق فأت بها من المغرب إن كنت إلٰها كما تدعى ، فتحير وانقطع جدله من قوة الحجة التى كشفت عجزه وغروره ، والله لا يوفق المصرّين المعاندين إلى اتباع الحق .

٢٥٩ - ثم تدبّر فى مثل هذه القصة العجيبة قصة الذى مرَّ على قرية متهدمة سقطت سقوفها وهدمت حيطانها وهلك أهلها ، فقال : كيف يحيى الله أهل هذه القرية بعد موتهم ؟ فأماته الله وأبقاه على موته مائة عام ثم بعثه ليظهر له سهولة البعث ويزول استبعاده ، ثم سئل أى مدة مكثتها ميتا ؟ قال : غير شاعر بطول المدة : يوما أو بعض يوم ، قيل له بل مكثت على هذه الحالة مائة عام ، ثم لفت الله نظره إلى أمر آخر من دلائل قدرته فقال له : فانظر إلى طعامك لم يفسد ، وإلى شرابك لم يتغير ، وانظر إلى حمارك أيضا ، وقد فعلنا ذلك لتعاين ما استبعدته من إحياء بعد الموت ولنجعلك آية ناطقة للناس تدل على صدق البعث ، ثم أمره الله أن ينظر إلى عجيب خلقه للأحياء ، وكيف يركّب عظامها ، ثم يكسوها لحما ، ثم ينفخ فيها الروح فتتحرك ، فلما وضحت له قدرته تعالى وسهولة البعث ، قال : أعلم أن الله قادر على كل شىء .

258. Разве ты не знал (о Мухаммад!) того, кто, как слепой, не видел знамений веры и препирался с Ибрахимом о Господе и Его Единстве? Поистине, он ослеп и обманулся своей властью, данной ему Аллахом, что отклонило его от Света веры и направило к мраку язычества. Ибрахим сказал ему: "Аллах дарует нам жизнь и смерть". Но тот ему ответил, что он тоже дарует жизнь и смерть, когда решает убить или помиловать человека. Ибрахим сказал: "Вот Аллах повелевает солнцу восходить с востока, ты вели ему взойти с запада, если ты действительно Господь, как ты говоришь!" Тот, который не верил, был повергнут в смущение и перестал препираться с Ибрахимом после упомянутого довода, который показал его невежество и тщеславие. Аллах не ведёт праведным путём неверных!

259. Подумай о значении этой истории: проходящий мимо разрушенного селения (Иерусалима) сказал: "Как может Аллах оживить обитателей этого селения после их смерти?" Тогда Господь умертвил его на сто лет, потом оживил и спросил его: "Сколько времени ты пробыл здесь?" Он ответил, не чувствуя времени, что пробыл здесь день или часть дня. Тогда Господь сказал ему, что пробыл он здесь долгих сто лет. Аллах обратил его внимание и на другое знамение: "Посмотри на твою пищу и твоё питьё, их не коснулась порча; взгляни на своего осла - груду костей. Мы сделали это, чтобы ты воочию убедился, что Мы можем оживить мёртвого, а также, чтобы сделать тебя знамением для людей. Посмотри на кости, как Мы их собираем, потом одеваем в плоть и воскрешаем". И тогда ему ясно стало могущество Аллаха Всевышнего, и он сказал: "Я знаю, что Аллах мощен над всякой вещью, Всемогущ!"

ٱلْمَوْتَىٰ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ ٱلطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ ٱجْعَلْ عَلَىٰ
كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ٱدْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا وَٱعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَّثَلُ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمْ
فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ وَٱللَّهُ يُضَٰعِفُ لِمَن يَشَآءُ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ
عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَآ أَنفَقُوا۟ مَنًّا وَلَآ أَذًى لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾ * قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّن صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَآ أَذًى وَٱللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ﴿٢٦٣﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ

٢٦٠ - واذكر كذلك قصة إبراهيم إذ قال إبراهيم : رب أرنى كيفية إحياء الموتى ، فسأله ربه عن إيمانه بإحياء الموتى ليجيب إبراهيم بما يزيل كل الشك فى إيمانه ، فقال الله له : أو لم تؤمن بإحياء الموتى ؟ قال : إنى آمنت ولكنى طلبت ذلك ليزداد اطمئنان قلبى . قال : فخذ أربعة من الطير الحى فضمها إليك لتعرفهن جيدا ، ثم جزّئهن بعد ذبحهن ، واجعل على كل جبل من الجبال المجاورة جزءا منهن ، ثم نادهنّ فسيأتينك ساعيات وفيهنّ الحياة كما هى ، واعلم أن الله لا يعجز عن شىء ، وهو ذو حكمة بالغة فى كل أمر(١) .

٢٦١ - إن حال الذين يبذلون أموالهم فى طاعة الله ووجوه الخير وينالون على ذلك ثواب الله المضاعف أضعافا كثيرة ، كحال من يبذر حبة فى الأرض طيبة فتنبت منها شجيرة فيها سبع سنابل فى كل سنبلة مائة حبة ، وهذا تصوير لكثرة ما يعطيه الله من جزاء على الإنفاق فى الدنيا ، والله يضاعف عطاءه لمن يشاء فهو واسع الفضل ، عليم بمن يستحق وبمن لا يستحق .

٢٦٢ - إن الذين ينفقون أموالهم فى وجوه البر المشروعة دون مَنّ أو تفاخر أو تطاول على المحسن إليه . لهم أجرهم العظيم الموعود به عند ربهم ، ولا يصيبهم خوف من شىء ولا حزن على شىء .

٢٦٣ - قول تطيب به النفوس وتستر معه حال الفقير فلا تذكر لغيره خير من عطاء يتبعه إيذاء بالقول أو الفعل ، والله - سبحانه وتعالى - غنى عن كل عطاء مصحوب بالأذى ، ويمكّن الفقراء من الرزق الطيب ، ولا يعجل بعقوبته من لا يعطى رجاء أن يهتدى إلى العطاء .

---

(١) ذكر الفخر الرازى وغيره أن هناك رأيا آخر فى تفسير النص الكريم وهو أن ابراهيم لم يذبحهن ولم يؤمر بالذبح وأنه أمر بضمهن إليه ترويضا لهن على البقاء عنده ثم قسمهن فجعل على كل جبل واحدة من الأربع ثم دعاهن فجئن إليه وهذا تصوير لخلق الله تعالى للأشياء من أنها تكون بأمره للشىء كن فيكون كما دعاهن فجئن إليه .

260. И вспомни также историю Ибрахима, когда он попросил Аллаха показать, как Он оживляет мёртвых. Аллах спросил Ибрахима: "Ужели ты до сих пор не уверил?" Ибрахим ответил, что он уверил, но хочет увидеть это своими глазами, чтобы больше успокоилось его сердце. Тогда Аллах сказал: " Возьми четырёх птиц, зарежь их, разрежь на части и помести их на разных холмах, а потом позови их к себе: они быстро прилетят к тебе. Знай же, Ибрахим, что Аллах Всемогущ и Мудр". Если Он пожелает что-нибудь, то только скажет: "Будь!"- и оно бывает.

261. Те, которые расходуют своё имущество на благо на пути Аллаха, повинуясь Ему, за что будут вознаграждены, подобны зерну, которое выращивается в доброй земле и порождает семь колосьев, а в каждом колосе - сто таких же зёрен. Это - награда Аллаха за расходы в нашей жизни на пути Аллаха. Аллах удваивает награждение тому, кому Он пожелает. Поистине, благость Аллаха велика! Он знает, кто достоин награды, а кто недостоин.

262. Тем, которые тратят из своего добра на пути Аллаха и своих пожертвований не сопровождают хвастовством, упрёками и обидами в адрес тех, кому помогают, будет большая награда от их Господа. Им не будет страха, и не будут они в печали.

263. Доброе слово, которое успокаивает души и не унижает достоинства бедных перед другими, лучше, чем милостыня, за которой следуют укор и обида. Аллах, Славный, Всевышний, - богат, и не нуждается в милостыне, за которой следуют обида и попрёки. Аллах посылает бедным добрый, чистый удел, и Он не торопится с наказанием того, кто не даёт милостыню. Может быть, они пойдут по пути Аллаха и будут помогать бедным!

ءَامَنُوا۟ لَا تُبْطِلُوا۟ صَدَقَٰتِكُم بِٱلْمَنِّ وَٱلْأَذَىٰ كَٱلَّذِى يُنفِقُ مَالَهُۥ رِئَآءَ ٱلنَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ ۖ فَمَثَلُهُۥ
كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُۥ وَابِلٌ فَتَرَكَهُۥ صَلْدًا ۖ لَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَىْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا۟ ۗ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ
ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٢٦٤﴾ وَمَثَلُ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمُ ٱبْتِغَآءَ مَرْضَاتِ ٱللَّهِ وَتَثْبِيتًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا
وَابِلٌ فَـَٔاتَتْ أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ فَإِن لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٦٥﴾ أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَن تَكُونَ لَهُۥ
جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ لَهُۥ فِيهَا مِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ وَأَصَابَهُ ٱلْكِبَرُ وَلَهُۥ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ فَأَصَابَهَآ
إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَٱحْتَرَقَتْ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلْءَايَٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٦٦﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَنفِقُوا۟

٢٦٤ - لا تضيعوا ثواب صدقاتكم - أيها المؤمنون - بإظهار فضلكم على المحتاجين وإيذائهم فتكونوا كالذين ينفقون أموالهم بدافع الرغبة فى الشهرة وحب الثناء من الناس ، وهم لا يؤمنون بالله ولا باليوم الآخر ، فإن حال المرائى فى نفقته كحال حجر أملس عليه تراب ، هطل عليه مطر شديد فأزال ما عليه من تراب .. فكما أن المطر الغزير يزيل التراب الخصب المنتج من الحجر الأملس ، فكذلك المن والأذى والرياء تبطل ثواب الصدقات .. فلا ينتفع المنتفعون بشىء منها ، وتلك صفات الكفار فتجنبوها ، لأن الله لا يوفق الكافرين إلى الخير والإرشاد .

٢٦٥ - حال الذين ينفقون أموالهم طلباً لمرضاة الله وتثبيتا لأنفسهم على الإيمان ، كحال صاحب بستان بأرض خصبة مرتفعة(١) يفيده كثير الماء وقليله ، فإن أصابه مطر غزير أثمر مثلين ، وإن لم يصبه المطر الكثير بل القليل فإنه يكفى لإثماره لجودة الأرض وطيبها ،فهو مثمر فى الحالتين ، فالمؤمنون المخلصون لاتبور أعمالهم ، والله لايخفى عليه شىء من أعمالكم .

٢٦٦ - إنه لا يحب أحد منكم أن يكون له بستان من نخيل وأعناب تجرى خلالها الأنهار وقد أثمر له البستان من كل الثمرات التى يريدها ، وأصابه ضعف الكبر وله ذرية ضعاف لايقدرون على الكسب ولا يستطيع هو لكبره شيئا ، وجفّ بستانه فى هذه الحال العاجزة بسبب ريح شديدة فيها نار فأحرقته(٢) ، وصاحبه وذريته أحوج ما يكونون إليه ، وكذلك شأن من ينفق ويتصدق ثم يعقب النفقة والصدقة بالمن والأذى والرياء فيبطل بذلك ثواب نفقته ولا يستطيع أن يتصدق من بعد ذلك طيبة نفسه ، ومثل هذا البيان يبين الله لكم الآيات لتتفكروا فيها وتعملوا بها .

(١) فى تعبير القرآن الكريم بكلمة ربوة وهى الأرض الخصبة المرتفعة إشارة إلى ما كشفه العلم الحديث لأنها بارتفاعها تبعد عن المياه الجوفية فيغوص المجموع الجذرى فى التربة من غير ماء يضره ويتضاعف عدد الشعيرات الماصة لأكبر كمية من الغذاء للسيقان المجموع الخضرى فيتضاعف المحصول . وللوابل من الأمطار فائدة فوق التغذية أنه يذيب بعض المواد التى تحتاج إليها النباتات ويغسلها مما يعطل نموها كما يغسلها من الآفات .

(٢) يفسر العلم الحديث الإعصار بأنه اضطراب جوى يتميز برياح شديدة يصحبه رعد وبرق وأمطار وقد يكون فيه نار إذا كان مقترنا بتفريغ شحنات كهربائية من السحب أو يحمل قذائف نارية من بركان ثائر قريب تهلك ما حولها من أشجار وثمار والنص القرآنى يشير إلى كل هذه المعانى .

264. О верующие! Не теряйте награду Аллаха за ваши благодеяния, сопровождая их попрёками или обидой и показывая людям, что вы оказываете благодеяния нуждающимся; иначе вы уподобитесь тем, которые тратят своё имущество ради славы или похвал от людей, не веря в Аллаха и в Судный день. Лицемер, который таким образом оказывает помощь, подобен гладкой скале, покрытой землёй, на которую обрушился ливень и смыл землю, оставив скалу голой. Как ливень смывает с гладкой скалы плодородную землю, попрёки, обида и лицемерие стирают награждение Аллаха за такую милостыню. Бесплодными будут такие деяния и не будет награды за них. Это - качества, присущие язычникам. Отклонитесь от этих качеств. Аллах не ведёт неверных по прямому пути к благу.

265. Те, которые расходуют из своего имущества, желая быть угодными Господу, стремясь к укреплению своей веры, подобны хозяину сада на тучном холме, дающего плоды и при небольшом дожде и когда прольётся на него обильный дождь. Если пройдёт ливень, сад даст плоды вдвойне, но и при небольшом дожде сад даёт плоды, потому что земля плодородная. У искренне верующих не пропадают благие дела. Аллах видит всё, что вы делаете!

266. Разве хотел бы кто-нибудь из вас обладать садом, полным пальм и виноградных лоз, в котором бы текли ручьи и в котором бы были всякие плоды; и наступила бы старость в то время, как у него были малые дети; и налетел бы ураган, и молния сожгла бы этот сад, так нужный хозяину в старости? Таким будет тот, кто даёт милостыню и сопровождает её попрёками, обидой и лицемерием, перечёркивая то доброе, что он сделал. Так разъясняет Аллах вам Свои знамения, - может быть, вы уразумеете!

مِن طَيِّبَٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا۟ ٱلْخَبِيثَ مِنْهُ تُنفِقُونَ وَلَسْتُم بِـَٔاخِذِيهِ إِلَّآ أَن
تُغْمِضُوا۟ فِيهِ ۚ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ حَمِيدٌ ﴿٢٦٧﴾ ٱلشَّيْطَٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِٱلْفَحْشَآءِ ۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ
وَفَضْلًا ۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦٨﴾ يُؤْتِى ٱلْحِكْمَةَ مَن يَشَآءُ ۚ وَمَن يُؤْتَ ٱلْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِىَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ
أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ ﴿٢٦٩﴾ وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُهُۥ ۗ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿٢٧٠﴾ إِن تُبْدُوا۟

٢٦٧ - يا أيها المؤمنون أنفقوا من جيِّد ما تحصلونه بعملكم ، ومما يتيسر لكم إخراجه من الأرض من زروع ومعادن وغيرها ، ولا تتعمدوا الإنفاق من ردىء المال وخبيثه مع أنكم لا تأخذونه لو قُدِّمَ إليكم إلا على إغماض وتساهل صارفين النظر عما فيه من خبث ورداءة ، واعلموا أن الله غنى عن صدقاتكم ، مستحق للحمد بما أرشدكم إليه من خير وصلاح .

٢٦٨ - الشيطان يخوفكم من الفقر ويثنيكم عن كل عمل صالح ليصرفكم عن الإنفاق فى وجوه الخير ويغريكم بالمعاصى ، والله واسع المغفرة قادر على إغنائكم ، لا يخفى عليه شىء من أموركم .

٢٦٩ - يعطى صفة الحكمة من إصابة الحق فى القول والعمل من يشاء من عباده ، ومن أُعطِىَ ذلك فقد نال خيراً كثيراً لأن به انتظام أمر الدنيا والآخرة ، وما ينتفع بالعظة والاعتبار بأعمال القرآن إلاَّ ذوو العقول السليمة التى تدرك الحقائق من غير طغيان الأهواء الفاسدة .

٢٧٠ - وما أنفقتم من نفقة فى الخير أو الشر ، أو التزمتم بنفقة فى طاعة فإن الله يعلمه وسيجزيكم عليه ، وليس للظالمين الذين ينفقون رياء أو يؤذون فى نفقتهم أو ينفقون فى المعاصى أعوان يدفعون عنهم عذاب الله فى الآخرة .

267. О вы, верующие! Расходуйте лучшее из того, что вы зарабатываете, или из того, что дарует вам земля. Не жертвуйте того, от чего бы вы отказались сами, если бы вам это предложили; а если бы и взяли, то только закрыв глаза. Знайте, что Аллах богат, и Ему не нужны ваши неискренние благодеяния. Он достоин славы за то, что направляет вас к благодеяниям и благочестию.

268. Шайтан пугает вас бедностью и старается отвратить вас от благодеяний, чтобы вы не расходовали имущество на богоугодные дела, а соблазняет вас быть скупыми, не давать милостыню и совершать непристойные дела. Аллах обещает вам Своё прощение и милость. Он знает все ваши поступки и дела.

269. Аллах дарует мудрость тому, кому пожелает, чтобы он был справедлив в речах, поступках и делах. Кому дарована мудрость, тому даровано великое благо от Аллаха. Только разумные люди понимают знамения Аллаха и следуют знамениям и увещеваниям Корана, потому что хорошо понимают истину и не поддаются скверным страстям.

270. Что бы вы ни израсходовали на благие дела или на дурные дела, Аллах знает и воздаст вам за это. Какой бы обет вы ни дали Аллаху, Ему известно об этом. Те неверные, которые тратят имущество ради тщеславия, а не ради Аллаха, или сопровождают свою милостыню попрёками и обидой, или расходуют на нечестивые дела, у них не будет заступников в Судный день, чтобы защитить их от мучений в последующей жизни.

ٱلصَّدَقَٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ ۖ وَإِن تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا ٱلْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنكُم مِّن سَيِّـَٔاتِكُمْ ۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
خَبِيرٌ ﴿٢٧١﴾ * لَّيْسَ عَلَيْكَ هُدَىٰهُمْ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يَهْدِى مَن يَشَآءُ ۗ وَمَا تُنفِقُوا۟ مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنفُسِكُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُونَ
إِلَّا ٱبْتِغَآءَ وَجْهِ ٱللَّهِ ۚ وَمَا تُنفِقُوا۟ مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٢﴾ لِلْفُقَرَآءِ ٱلَّذِينَ أُحْصِرُوا۟ فِى سَبِيلِ
ٱللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِى ٱلْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ ٱلْجَاهِلُ أَغْنِيَآءَ مِنَ ٱلتَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُم بِسِيمَٰهُمْ لَا يَسْـَٔلُونَ ٱلنَّاسَ
إِلْحَافًا ۗ وَمَا تُنفِقُوا۟ مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٌ ﴿٢٧٣﴾ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُم بِٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٤﴾ ٱلَّذِينَ يَأْكُلُونَ ٱلرِّبَوٰا۟ لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ ٱلَّذِى

٢٧١ - إن تظهروا صدقاتكم خالية من الرياء فذلك محمود لكم مرضى منكم ، ممدوح من ربكم ، وإن تعطوها الفقراء سرا منعا لحرجهم وخشية الرياء فذلك خير لكم ، والله يغفر لكم من ذنوبكم بسبب إخلاصكم فى صدقاتكم ، والله يعلم ماتسرون وماتعلنون ويعلم نياتكم فى إعلانكم وإخفائكم .

٢٧٢ - ليس عليك ــ يامحمد ــ هداية هؤلاء الضالين أو حملهم على الخير ، وإنما عليك البلاغ ، والله يهدى من يشاء ، وما تبذلونه من معونة لغيركم ففائدته عائدة عليكم ، والله مثيبكم عليه ، وهذا إذا كنتم لاتقصدون بالإنفاق إلا رضاء الله ، وأى خير تنفقونه على هذا الوجه يعود إليكم ، ويصلكم ثوابه كاملا دون أن ينالكم ظلم .

٢٧٣ - وذلك الإنفاق والبذل يكون للفقراء الذين كانوابسبب الجهاد فى سبيل الله غير قادرين على الكسب ، أو لأنهم أصيبوا فى الجهاد بجراحات أقعدتهم عن السعى فى الأرض ، وهم متعففون عن السؤال يحسبهم الجاهل بحالهم أغنياء ، ولكنك إذا تعرفت حالهم عرفت هذه الحالة بعلامتها . وما تبذلونه من معروف فإن الله عليم به ، سيجزيكم عليه الجزاء الأوفى .

٢٧٤ - الذين من شأنهم الإنفاق تسخو نفوسهم فى الليل والنهار وفى العلانية والسر ، لهم جزاؤهم عند ربهم ، لا ينالهم خوف من أمر مستقبلهم ، ولا حزن على شىء فاتهم .

271. Если вы открыто будете творить милостыню, но без лицемерия, то хорошо; а если вы скроете её, подавая бедным, чтобы они не стеснялись, то это - лучше для вас. Поистине, Аллах прощает за это ваши прегрешения. Он знает, что вы скрываете в своих сердцах и что объявляете. Он знает ваши намерения во всём, что вы делаете открыто или тайно.

272. Не на тебя (о Мухаммад!) возложена ответственность вести их праведным путём или заставить их творить добро. Твоя ответственность в том, чтобы донести до них заповеди Аллаха, а Он ведёт прямым путём того, кого захочет, и открывает их сердца к истинной вере. Чтобы вы ни потратили на добродеяния и помощь другим - только для вас. Аллах наградит вас за это, если только вы стремитесь выполнить свои обязанности перед Богом и удовлетворить свои верующие сердца и свою совесть. Что бы вы ни пожертвовали на благие дела, вам будет полностью воздано за это, и вы не будете обижены!

273. Среди бедных, на которых нужно жертвовать, те, которые сражались, защищая веру, и, вследствие этого, страдая от физических недостатков, отражающихся на трудоспособности, не могут работать и зарабатывать деньги. Они горды и ничего не просят. Их скромность побуждает незнающего подумать, что они живут в достатке, но ты можешь по разным признакам узнать, как они нуждаются. Что бы вы ни пожертвовали из добра вашего, Аллах знает об этом, и вам будет полная награда за это.

274. Те, кто жертвует из своего имущества ночью и днём, открыто и тайно, найдут свою награду у Господа. Они не боятся за своё будущее и не огорчаются за то, что миновало их из мирских благ. Нет страха над ними, и не будут они печальны!

يَتَخَبَّطُهُ ٱلشَّيْطَٰنُ مِنَ ٱلْمَسِّ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوٓا۟ إِنَّمَا ٱلْبَيْعُ مِثْلُ ٱلرِّبَوٰا۟ ۗ وَأَحَلَّ ٱللَّهُ ٱلْبَيْعَ وَحَرَّمَ ٱلرِّبَوٰا۟ ۚ فَمَن
جَآءَهُۥ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّهِۦ فَٱنتَهَىٰ فَلَهُۥ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُۥٓ إِلَى ٱللَّهِ ۖ وَمَنْ عَادَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا
خَٰلِدُونَ ﴿٢٧٥﴾ يَمْحَقُ ٱللَّهُ ٱلرِّبَوٰا۟ وَيُرْبِى ٱلصَّدَقَٰتِ ۗ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿٢٧٦﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟
ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَأَقَامُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُا۟ ٱلزَّكَوٰةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٧﴾
يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَذَرُوا۟ مَا بَقِىَ مِنَ ٱلرِّبَوٰٓا۟ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٧٨﴾ فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا۟ فَأْذَنُوا۟ بِحَرْبٍ مِّنَ ٱللَّهِ

٢٧٥ - الذين يتعاملون بالربا لا يكونون فى سعيهم وتصرفهم وسائر أحوالهم إلا فى اضطراب وخلل ، كالذى أفسد الشيطان عقله فصار يتعثر من الجنون الذى أصابه ، لأنهم يزعمون أن البيع مثل الربا فى أن كلا منهما فيه معاوضة وكسب . فيجب أن يكون كلاهما حلالاً ، وقد رد الله عليهم زعمهم فبين لهم أن التحليل والتحريم ليس من شأنهم ، وأن التماثل الذى زعموه ليس صادقا ، والله قد أحل البيع وحرم الربا ، فمن جاءه أمر ربه بتحريم الربا واهتدى به ، فله ما أخذه من الربا قبل تحريمه ، وأمره موكول إلى عفو الله . ومن عاد إلى التعامل بالربا باستحلاله بعد تحريمه ، فأولئك يلازمون النار خالدين فيها(١) .

٢٧٦ - إن الله يُذهب بالزيادة المأخوذة من الربا ، ويبارك فى المال الذى تؤخذ منه الصدقات ، ويثيب عليها أضعافا مضاعفة : والله لايحب الذين يصرون على تحليل المحرمات كالربا ، ولا الذين يستمرون على ارتكابها .

٢٧٧ - إن الذين آمنوا بالله ، وامتثلوا أوامره فعملوا الصالحات التى أمر بها ، وتركوا المحرمات التى نهى عنها ، وأدوا الصلاة على الوجه الأكمل ، وأعطوا الزكاة لأهلها ، لهم ثوابهم العظيم المدخر عند ربهم ، ولا خوف عليهم من شىء فى المستقبل ، ولا هم يحزنون على شىء فاتهم .

٢٧٨ - ياأيها الذين آمنوا خافوا الله واستشعروا هيبته فى قلوبكم ، واتركوا طلب مابقى لكم من الربا فى ذمة الناس إن كنتم مؤمنين حقا .

---

(١) الربا المذكور فى الآية هو ربا الجاهلية وهو الزيادة فى الديون فى نظير الأجل وهو حرام فى قليله وكثيره ، وقال الإمام أحمد « لايسع مسلما أن ينكره » ويقابله ربا البيوع وهو ثابت بالسنة فى قوله عليه السلام : « البر بالبر مثلا بمثل يدا بيد والشعير بالشعير مثلا بمثل يدا بيد والذهب بالذهب مثلا بمثل يدا بيد والفضة بالفضة مثلا بمثل ، يدا بيد ، والتمر بالتمر مثلا بمثل يدا بيد فمن زاد أو استزاد فقد أربى » .

وقد اتفق الفقهاء على تحريم الزيادة عند المبادلة مع اتحاد الجنس فى هذه الأشياء وأباحوا الزيادة إذا اختلف الجنس ولكن حرموا التأجيل من هذه الأصناف واختلفوا فى قياس غيرها عليها اختلافا طويلا وأقرب الآراء أن يقاس عليها كل ما هو مطعوم قابل للادخار ، وربا الجاهلية لا خلاف فيه فمنكره « كافر » وأن ربا الجاهلية يصيب آكله ومؤاكله باضطرابات نفسية وعصبية نتيجة إرهاقه وتركيز ذهنه فى المال الذى أقرضه أو أخذه ، فالدائن فى قلق بسبب انحصار ذهنه وفراغ نفسه من كل عمل ، والمدين فى هم وخوف من ألا يسدده . وقد أسند بعض كبار الأطباء كثرة ضغط الدم والنزلات القلبية إلى كثرة التعامل بالربا .

وتحريم الربا فى القرآن كما هو فى كل الديانات السماوية تنظيم اقتصادى ويتفق التحريم مع ماقرره الفلاسفة . ذلك لأن النقد=

275. Те, которые дают деньги в рост, будут лишены душевного равновесия и спокойствия в работе, в поступках и т.д., подобно тому, кого поверг в безумство шайтан своим прикосновением. Они говорят, что торговля и ростовщичество - одно и то же, так как в обеих операциях есть обмен и прибыль, и поэтому оно должно быть разрешено. Аллах объявил, что разрешено и что запрещено, - это не их дело, - и того сходства, про которое они говорят, не существует. Аллах разрешил торговлю, но запретил ростовщичество. Тот, кто послушен заветам Аллаха и удержится от ростовщичества, тому будет прощено то, что было в прошлом до запрещения ростовщичества: дело его принадлежит Аллаху и Его прощению. Те, кто эту мерзость повторяет, - обитатели огня, они в нём вечно пребудут!

276. Аллах запрещает заниматься ростовщичеством и уничтожает прибыль от роста. Он увеличивает имущество, из которого даётся милостыня, и воздаёт за неё. Аллах не любит тех, которые настаивают на разрешении запретного Им (как ростовщичество), не любит тех, которые продолжают заниматься ростом. Поистине, Аллах не любит нечестивца!

277. Те, которые уверовали в Аллаха, слушали Его увещевания, творили благие дела, совершали молитвы, давали очистительную милость (закят) - им великая награда от Господа их. Нет страха над ними за будущее, и они ни в чём не будут печальны!

278. О вы, которые уверовали, бойтесь Аллаха и почувствуйте в своих сердцах почтение к Нему, и перестаньте требовать от людей то, что остаётся вам из роста, если вы истинно верующие.

وَرَسُولِهِۦ ۖ وَإِن تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوسُ أَمْوَٰلِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٩﴾ وَإِن كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ
وَأَن تَصَدَّقُوا۟ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾ وَٱتَّقُوا۟ يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى ٱللَّهِ ۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا تَدَايَنتُم بِدَيْنٍ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَٱكْتُبُوهُ ۚ وَلْيَكْتُب بَّيْنَكُمْ
كَاتِبٌۢ بِٱلْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَن يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ ٱللَّهُ ۚ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ ٱلَّذِى عَلَيْهِ ٱلْحَقُّ وَلْيَتَّقِ ٱللَّهَ رَبَّهُۥ
وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا ۚ فَإِن كَانَ ٱلَّذِى عَلَيْهِ ٱلْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَن يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُۥ بِٱلْعَدْلِ ۚ
وَٱسْتَشْهِدُوا۟ شَهِيدَيْنِ مِن رِّجَالِكُمْ ۖ فَإِن لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَٱمْرَأَتَانِ مِمَّن تَرْضَوْنَ مِنَ ٱلشُّهَدَآءِ أَن تَضِلَّ
إِحْدَىٰهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَىٰهُمَا ٱلْأُخْرَىٰ ۚ وَلَا يَأْبَ ٱلشُّهَدَآءُ إِذَا مَا دُعُوا۟ ۚ وَلَا تَسْـَٔمُوٓا۟ أَن تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا
إِلَىٰٓ أَجَلِهِۦ ۚ ذَٰلِكُمْ أَقْسَطُ عِندَ ٱللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَٰدَةِ وَأَدْنَىٰٓ أَلَّا تَرْتَابُوٓا۟ ۖ إِلَّآ أَن تَكُونَ تِجَٰرَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ
فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۗ وَأَشْهِدُوٓا۟ إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۚ وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ ۚ وَإِن تَفْعَلُوا۟ فَإِنَّهُۥ فُسُوقٌۢ بِكُمْ ۗ
وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۖ وَيُعَلِّمُكُمُ ٱللَّهُ ۗ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٨٢﴾ * وَإِن كُنتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا۟ كَاتِبًا فَرِهَٰنٌ مَّقْبُوضَةٌ

---

٢٧٩ - فإن لم تفعلوا ما أمركم الله به من ترك الربا فكونوا على يقين من أنكم فى حرب من الله ورسوله لمعاندتكم لأمره ، فإن أردتم توبة مقبولة فلكم رءوس أموالكم فلا تأخذوا زيادة عليها قلّت أو كثرت وأيا كان سبب الدين ومصرفه ، لأن الزيادة التى تأخذونها ظلم لغيركم ، كما أن ترك جزء من رءوس الأموال ظلم لكم .

٢٨٠ - وإن وُجد ذو عسرة فأعطوه وأمهلوه عند انقضاء أجل الدين إلى وقت ميسرته ، وتصدقكم عليه بالتنازل عن الدين أو بعضه خير لكم إن كنتم من أهل العلم والفهم لخطاب الله الذى يعلمكم المروءة والإنسانية .

٢٨١ - وخافوا أهوال يوم تعودون فيه إلى الله ، ثم تستوفى كل نفس جزاء ما عملت من خير أو شر .

٢٨٢ - ياأيها الذين آمنوا إذا داين بعضكم بعضا بدين مؤجل إلى أجل ، ينبغى أن يكون الأجل

= لايلد النقد والاقتصاديون يقررون أن طرق الكسب أربعة : ثلاثة منها منتجة ، والرابعة غير منتجة فالثلاثة المنتجة : العمل ويتبعه الصناعة والزراعة والمخاطرة فى التجارة لأنها بنقل الأشياء من مكان إنتاجها إلى مكان استهلاكها تتعرض لمخاطر ولأنها تزيد قيمتها بهذا الانتقال وذلك فى ذاته إنتاج . أما الرابعة فهى الفائدة أو الربا وهذه لا مخاطرة فيها لأن القرض لايتعرض للخسارة بل له الكسب دائما ولأنه لا إنتاج إلا العمل المقترض فالفائدة نتيجة لقيمة القرض .. وإذا كان المسبب هو القرض فهو بتوسيط غيره من غير تعرض للخسارة . والطبيعى إن كان ينتج بنفسه ويقرض ذلك فإن شيوع الكسب بالفائدة يؤدى إلى تحكم رؤوس الأموال فى العمل ويؤدى إلى فراغ وعطل فيكون الاضطراب والكسل .

279. Если же вы не оставите ростовщичества, как приказал вам Аллах, то знайте, что у Аллаха и Его посланника будет война с вами: война веры против неверия; но если вы покаетесь, то при вас останется только ваш капитал, ни больше и не меньше. Не берите больше, несмотря на причину долга, потому что рост, который вы берёте, представляет несправедливость по отношению к людям. И не берите меньше, чтобы не быть обиженными!

280. Если же ваш должник отягощён бедностью, то ждите, пока его дела не улучшатся. Но оказать ему милость, простив ему долг или часть его, - лучше для вас, если вы знаете и понимаете Послание Аллаха, в котором Он учит вас быть щедрыми, великодушными, гуманными.

281. Бойтесь того Дня, когда вы все вернётесь к Аллаху, и каждая душа получит сполна за то, что приобрела она себе (из добра или зла), и не одна из них не будет обижена.

282. О вы, которые уверовали, если берёте в долг деньги или что-либо другое, или купили что-то в кредит, или вошли в коммерческую сделку между собой на определённый срок, то записывайте это, чтобы оберегать свои права и избежать позже всяческих недоразумений. Писец, который составляет расписку (договор, контракт и т.д.), должен делать это по справедливости. Писец не должен отказываться писать, а должен благодарить Аллаха за то, что Он научил Его тому, чего он не знал. Тот, кто занимает, пусть диктует, но он должен бояться Бога, Господа своего, и ничего не убавлять из того, что занимает. Если тот, кто занимает, малоумен и не может оценить как следует ситуацию, или слаб здоровьем, или совсем молод, или слишком стар, или немой и не может диктовать, или не знает, как составить официальный документ, тогда пусть диктует, который за него отвечает, в соответствии с шариатом по

معلوما ، فاكتبوه حفظا للحقوق وتفاديا من النزاع ، وعلى الكاتب أن يكون عادلا فى كتابته ، ولا يمتنع كاتب عن الكتابة ، شكراً لله الذى علمه ما لم يكن يعلم ، فليكتب ذلك الدين حسب اعتراف المدين وليخش المدينُ ربه ولا ينقص من الدين شيئا ، فإن كان المدين لا يحسن التصرف ولايقدر الأمور تقديرا حسنا ، أو كان ضعيفا لصغر أو مرض أو شيخوخة ، أو كان لا يستطيع الإملاء لخرس أو عقدة لسان أو جهل بلغة الوثيقة ، فَلْيُنِبْ عنه وليه الذى عينه الشرع أو الحاكم ، أو اختاره هو فى إملاء الدين على الكاتب بالعدل التام . وأشهدوا على ذلك الدين شاهدين من رجالكم ، فإن لم يوجدا فليشهد رجل وامرأتان تشهدان معا لتؤديا الشهادة معا عند الإنكار ، حتى إذا نسيت إحداهما ذكرتها الأخرى ، ولا يجوز الامتناع عن أداء الشهادة إذا ماطُلب الشهود ، ولاتسأموا أن تكتبوه صغيرا أو كبيرا مادام مؤجلا لأن ذلك أعدل فى شريعة الله وأقوى فى الدلالة على صحة الشهادة ، وأقرب إلى درء الشكوك بينكم ، إلا إذا كان التعامل على سبيل التجارة الحاضرة ، تتعاملون بها بينكم ، فلا مانع من ترك الكتابة إذ لا ضرورة إليها . ويطلب منكم أن تشهدوا على المبايعة حسما للنزاع ، وتفادوا أن يلحق أى ضرر بكاتب أو شاهد ، فذلك خروج على طاعة الله ، وخافوا الله واستحضروا هيبته فى أوامره ونواهيه ، فإن ذلك يلزم قلوبكم الإنصاف والعدالة ، والله يبين ما لكم وما عليكم ، وهو بكل شىء - من أعمالكم وغيرها - عليم[1] ..

---

(١) من أدق المسائل القانونية فى جميع القوانين الحديثة قواعد الإثبات وهى الطرق التى يثبت بها صاحب الحق حقه إذا ما لجأ إلى القضاء يطلبه من خصيمه .

يوجب القرآن على الناس الإنصاف والعدل ولو أنصف الناس لاستراح القاضى ، ولكن النفوس البشرية بما جبلت عليه من مختلف الطبائع من طمع إلى حب للمال وإلى شره إلى أثرة إلى نسيان إلى رغبة فى الانتقام ، كل ذلك جعل الحقوق بينهم متنازعا عليها مختلفا فيها ، فوجب أن تكون هناك قواعد للإثبات تكون وسيلة فى تبين وجه الحق .

ولا نزاع أن الكتابة عند الخلف هى أقوى الأدلة لأنه عند عدم الخلف يعترف الغريم بحق خصمه . فإذا قال : بعتك أو أجرتك أو دايتك وجب أن يثبت كل ذلك بالكتابة ، ولو فعل كل الناس ذلك لضاقت شقة الخلف بينهم . ولكن وقد تقدم العمران واشتبكت مصالح الناس عمدوا إلى وسائل السرعة فأصبحت التقاليد التجارية تسمح للتاجر فى لندن أن يعقد عقدا كبير القيمة برسالة تليفونية أو لاسلكية فى نيويورك مرغما على أن لايحم الكتابة فى صفقته التى قد تصل إلى الملايين فإذا ما اختلف العاقدان على الصفقة ولجآ إلى القضاء أباح لهما .

справедливости. И для засвидетельствования призовите двух мужчин. А если не найдёте двух мужчин, то берите в свидетели мужчину и двух женщин, которых вы согласны взять в свидетели. И если одна собьётся в показаниях, то другая ей поможет вспомнить. Свидетели, когда их призовут, не должны отказываться от свидетельства. Не пренебрегайте распиской о долге, большой он или малый, указывая срок уплаты. Это справедливо перед Богом и соответствует шариату, удобно для свидетелей и для устранения всяческих недоразумений. Но если будут между вами какие-либо личные торговые обороты или сделки и если это будет торговлей наличной, не будет вины на вас, если вы не будете давать расписок. При коммерческих операциях, в частности, при продаже чего-нибудь, договариваясь между собой, берите свидетелей. Над свидетелем и над писцом не должно быть насилия. А если вы причините им неприятности, то это будет неповиновением Аллаху. Бойтесь Аллаха и почувствуйте в своих сердцах Его Величие и почтение к Его увещеваниям. Это обяжет вас придерживаться справедливости. Аллах показывает вам ваши права и обязанности перед Ним. Он знает все ваши поступки.

فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ ٱلَّذِى ٱؤْتُمِنَ أَمَـٰنَتَهُۥ وَلْيَتَّقِ ٱللَّهَ رَبَّهُۥ ۗ وَلَا تَكْتُمُوا۟ ٱلشَّهَـٰدَةَ ۚ وَمَن يَكْتُمْهَا
فَإِنَّهُۥٓ ءَاثِمٌ قَلْبُهُۥ ۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾ لِّلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۗ وَإِن تُبْدُوا۟ مَا فِىٓ أَنفُسِكُمْ
أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُم بِهِ ٱللَّهُ ۖ فَيَغْفِرُ لِمَن يَشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَآءُ ۗ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٤﴾ ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ
بِمَآ أُنزِلَ إِلَيْهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلْمُؤْمِنُونَ ۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَـٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ
مِّن رُّسُلِهِۦ ۚ وَقَالُوا۟ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا

٢٨٣ - وإذا كنتم فى سفر فلم تجدوا من يكتب لكم الدين ، فليكن ضمان الدين رهنا يأخذه الدائن من المدين . وإذا أودع أحدكم آخر وديعة تكون أمانة عنده ، وقد اعتمد على أمانته ، فليؤد المؤتمن الأمانة عند طلبها ، وليخش الله الذى رباه وتولاه بالعناية حتى لا يقطع عنه نعمته فى الدنيا والآخرة . ولا تكتموا الشهادة عند طلبها ، ومن يكتمها فهو آثم خبيث القلب ، والله بما تعملون عليم ، سيجزيكم عليه حسب ماتستحقون .

٢٨٤ - واعلموا أن لله ما فى السموات وما فى الأرض قد أحاط به قدرة وعلما ، وسواء أظهرتم مافى أنفسكم أو أخفيتموه فإن الله عليم خبير ، سيحاسبكم عليه يوم القيامة فيغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء وهو تعالى على كل شىء قدير ..

٢٨٥ - إن ما أُنزل إلى الرسول ــ محمد ــ هو الحق من عند الله ، وقد آمن به وآمن معه المؤمنون كل منهم آمن بالله وملائكته وكتبه ورسله ، وهم يسوُّون بين رسل الله فى الإيمان بهم وتعظيمهم قائلين : لا نفرق بين أحد من رسله ، وأكدوا إيمانهم القلبى بقولهم اللسانى متجهين إلى الله فى خطابهم : ربنا سمعنا تنزيلك المحكم واستجبنا لما فيه ، فامنحنا اللهم مغفرتك ، وإليك ــ وحدك ــ المصير والمرجع .

283. Если вы находитесь в пути и нет писца, чтобы написать расписку о долге, то кредитор берёт у должника залог как гарантию. Если человек доверяет что-то другому человеку, полагаясь на его честность, то тот при первом требовании должен вернуть доверенное. Он должен думать об Аллахе, сохранять сильную веру в своём сердце и бояться Аллаха, моля Его, чтобы не иссякло Его благо к нему в здешней жизни и в последующей жизни. Не скрывайте свидетельства, когда вас призовут свидетельствовать. Тот, кто скрывает свидетельства, - грешник, с нечистым сердцем. Поистине, Аллах знает то, что вы делаете, и наградит или накажет вас по вашим делам.

284. Знайте, что Аллаху принадлежит всё, что в небесах и на земле! Вы должны понимать, что всё то, что вы обнаруживаете или скрываете в ваших душах, знает Аллах Всеведущий и взыщет с вас за это в Судный день. Тогда Он простит, кого пожелает, и накажет, кого пожелает. Поистине Аллах Всевышний всемогущ над нами!

285. Посланник Мухаммад - да благословит его Аллах и приветствует! - уверовал в то, что ниспослано ему от Творца его, уверовали в это и верующие. Каждый из них верует в Аллаха, Его ангелов, Его Писания и Его посланников. Они верят во всех посланников Аллаха, с почтением относятся ко всем, говоря: “Не различаем мы между кем бы то ни было из Его посланников". Они подтвердили веру, укрепившуюся в их сердцах своими словами: "Мы услышали и повинуемся! Прощение Твоё, Господи, нам, и к Тебе наше возвращение!"

مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا ٱكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ إِن نَّسِينَآ أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِۦ ۖ وَٱعْفُ عَنَّا وَٱغْفِرْ لَنَا وَٱرْحَمْنَآ ۚ أَنتَ مَوْلَىٰنَا فَٱنصُرْنَا عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٢٨٦﴾

٢٨٦ – إن الله لا يكلف عباده إلا ما يستطيعون تأديته والقيام به ، ولذلك كان كل مكلف مجزيا بعمله : إن خيراً فخير وإن شرا فشر ، فاضرعوا إلى الله ــ أيها المؤمنون ــ داعين : ربنا لا تعاقبنا إن وقعنا فى النسيان لما كلفتنا إياه ، أو تعرضنا لأسباب يقع عندها الخطأ ، ربنا ولا تُشدِّد علينا فى التشريع كما شددت على اليهود بسبب تعنتهم وظلمهم ، ولا تكلفنا مالا طاقة لنا به من التكاليف ، واعف عنا بكرمك ، واغفر لنا بفضلك ، وارحمنا برحمتك الواسعة . إنك مولانا ، فانصرنا يارب – من أجل إعلاء كلمتك ونشر دينك – على القوم الجاحدين .

286. Аллах не возлагает на душу ничего, кроме возможного для неё. Каждой душе - то, что она приобрела: награда за добро и наказание за зло. Вы, которые уверовали, обратитесь к Аллаху и просите: "Господи наш! Не взыщи с нас, если мы забыли или погрешили. Господи наш! Не возлагай на нас бремя, которое Ты возложил на тех, кто* был раньше нас! Господи наш! Не возлагай на нас то, что нам невмочь. Избавь нас, прости нам и помилуй нас! Ты - наш Владыка, помоги же нам против народа неверного, чтобы возвысилось Твоё Слово и распространилась Твоя религия! "

* На иудеев - за их упрямство, бесчестия и несправедливость

(٣) سورة آل عمران مدنية
وآياتها ٢٠٠ نزلت بعد الأنفال

بسم الله الرحمن الرحيم

يتحدث القرآن الكريم من خلال ما يذكره من قصص عن سنن الله الكونية ، وعن العظات والعبر التى تستنتج ، ويبيّن فى أثناء القصة الكثير من العقائد والأحكام والأخلاق . وقد ذكر فى السورة السابقة طرفا من سيرة بنى إسرائيل صوَّر فيه الكثير من انحرافهم ، وفى هذه السورة .. يذكر جوانب أخرى من ضلالهم وانحرافهم ، ويرشد إلى ما ينبغى أن يكون عليه المؤمن فى عقيدته وسلوكه ، ويبين حقيقة الدين السماوى ، ويشير إلى آداب المجادلة ، ويذكر العادات فى الانتصار والفشل أحيانا . ويبين مقام الشهداء يوم القيامة والجزاء وعمومه للذَّكر والأنثى ، وطريق الفلاح ، وتبتدىء هذه السورة الكريمة بما ابتدأت به السورة السابقة .

(3) АЛЬ ‘ИМРАН

(Мединская сура)

СЕМЕЙСТВО ИМРАНА

Во имя Аллаха Милостивого, Милосердного!

Эта сура была ниспослана пророку Мухаммаду - да благословит его Аллах и приветствует! - в Медине. Она состоит из 200 айатов.

В рассказах, которые приводятся в Священном Коране, говорится о законах Аллаха во Вселенной и о назиданиях и поучениях, которые можно извлечь из них, о вере, убеждениях, нравах, а также даётся много наставлений.

В предыдущей суре рассказывалось о сынах Исраила и приводились примеры их отклонения от прямого пути.

В этой суре приводятся другие примеры их заблуждений, а также даны наставления о том, каким должен быть верующий в своей вере и каким должно быть его поведение. Здесь объясняется также суть небесной религии, указывается на необходимость вежливого поведения при споре и на традиции, связанные с победой или поражением.

В данной суре говорится о месте праведников, погибших в сражении за веру, в День воскресения, о награде или наказании как мужчинам, так и женщинам, и о пути к благочестию и счастью.

Сура "Семейство Имрана" начинается с того же, с чего началась предыдущая сура.

الٓمٓ ﴿١﴾ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَىُّ ٱلْقَيُّومُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ
ٱلتَّوْرَىٰةَ وَٱلْإِنجِيلَ ﴿٣﴾ مِن قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ ٱلْفُرْقَانَ إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ
وَٱللَّهُ عَزِيزٌ ذُو ٱنتِقَامٍ ﴿٤﴾ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَىْءٌ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا فِى ٱلسَّمَآءِ ﴿٥﴾ هُوَ ٱلَّذِى يُصَوِّرُكُمْ
فِى ٱلْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٦﴾ هُوَ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ مِنْهُ ءَايَٰتٌ مُّحْكَمَٰتٌ

١ - الم ، حروف صوتية سيقت لبيان أن القرآن المعجز من هذه الحروف ، ولتنبيههم فيسمعوا .

٢ - الله واحد لا إلٰه غيره ، وكل ما فى العالم من تنسيق وإبداع يشهد بذلك ، وهو الحى الذى لا يموت ، القائم بأمر العالم يدبره ويصرفه .

٣ - نَزَّلَ عليك - يامحمد - القرآن مشتملا على الحق فى كل ما تضمنه من أصول الشرائع السماوية فى الكتب السابقة ، ولقد أنزل الله من قبله التوراة على موسى والإنجيل على عيسى .

٤ - أنزلهما قبل القرآن لهداية الناس ، فلمَّا انحرفوا أنزل القرآن فارقا بين الحق والباطل ، ومبيِّنا الرشد من الغى ، فهو الكتاب الصادق الدائم ، وكل من ترك ما أنزله الله فيه وكفر بآياته فله عذاب شديد ، والله قادر لا يغلبه شىء ، منتقم ممن يستحق الانتقام .

٥ - إن الله عليم بكل شىء ، فهو لا يخفى عليه شىء فى الأرض ولا فى السماء ، صغيرا كان أو كبيرا ، ظاهرا أو باطنا .

٦ - وهو الذى يصوركم وأنتم أجنة فى الأرحام بصور مختلفة حسبما يريد ، لا إلٰه إلا هو العزيز فى ملكه ، الحكيم فى صنعه(١) .

---

(١) تشير الآية الكريمة إلى وجه من الوجوه المعجزة لقدرة البارىء المصوِّر وهو تحول البويضة المخصبة وهى خلية واحدة ضئيلة الحجم إلى إنسان سوى بكل ما يحويه جسمه من أجهزة وأعضاء وأنسجة بملايين الخلايا وآيات فى البنيان والوظيفة . وسوف تتوالى فى القرآن الكريم آيات تفصل بعض أطوار النمو الجنينى . ولكن الذى تنوه به هذه الآية الكريمة على وجه الخصوص هو المشيئة الإلٰهية المطلقة فى تصوير الجنين ، إذ أن الله يودع فى البويضة الدقيقة الحجم جميع المورثات الجينات التى تحدد جنس المولود ونصيبه من الخصائص الجسمانية بل ومواهبه العقلية والنفسية والسمات الرئيسية فى تكوين الشخصية الوارثة وإن كانت تسير على قوانين ثابتة إلا أن هذا التحديد لكل فرد بذاته من التقاء بويضة بعينها وحيوان منوى بعينه من بين الملايين من أقرانه هو من دلائل المشيئة المطلقة حتى إنه لا يتماثل فردان فى العالم تماثلا كاملا ، اللهم إلا فى توائم البويضة الواحدة فتكاد تتطابق .

1. А (Алиф) - Л (Лям) - М (Мим). Сура открывается этими буквами арабского алфавита, чтобы обратить внимание на чудо и неподражаемость Корана, который, хотя и написан на языке людей, нельзя превзойти, и чтобы люди слушали его.

2. Аллах - Един. Нет божества, кроме Аллаха. Всё на свете - Его творение, и устройство мира свидетельствует об этом. Он - Живой, Сущий, Бессмертный, хранит существование всего мира и управляет им.

3. Аллах ниспослал тебе (о Мухаммад!) Коран - правдивую Книгу, подтверждающую истинность небесных законов предыдущих Писаний. И ниспослал Он Тору Мусе и Евангелие - Исе.

4. Тора и Евангелие были ниспосланы до Корана как руководство для людей. Когда люди отклонились от пути, указанного Аллахом, Он ниспослал Коран - Различение между Истиной и ложью, - указывающий на разницу между благоразумием и заблуждением. Коран - вечная, правдивая Книга. Кто не следует руководству, изложенному в Коране, и не верит в его айаты, тому будет жестокое наказание. Аллах - Всемогущий, Побеждающий - Блюститель возмездия!

5. Аллах Всеведущ. От него не скрыто ничто на земле и на небе, малое или великое, тайное или явное.

6. Аллах - Тот, кто придаёт вам форму в утробах матерей, как пожелает. Нет божества, кроме Него, Всемогущего, Мудрого!

هُنَّ أُمُّ ٱلْكِتَٰبِ وَأُخَرُ مُتَشَٰبِهَٰتٌ ۖ فَأَمَّا ٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَٰبَهَ مِنْهُ ٱبْتِغَآءَ ٱلْفِتْنَةِ وَٱبْتِغَآءَ تَأْوِيلِهِۦ ۗ
وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُۥٓ إِلَّا ٱللَّهُ ۗ وَٱلرَّٰسِخُونَ فِى ٱلْعِلْمِ يَقُولُونَ ءَامَنَّا بِهِۦ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ ﴿٧﴾
رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْوَهَّابُ ﴿٨﴾ رَبَّنَآ إِنَّكَ جَامِعُ ٱلنَّاسِ
لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُخْلِفُ ٱلْمِيعَادَ ﴿٩﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَن تُغْنِىَ عَنْهُمْ أَمْوَٰلُهُمْ وَلَآ أَوْلَٰدُهُم
مِّنَ ٱللَّهِ شَيْـًٔا ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمْ وَقُودُ ٱلنَّارِ ﴿١٠﴾ كَدَأْبِ ءَالِ فِرْعَوْنَ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا فَأَخَذَهُمُ

٧ - وهو الذى أنزل عليك القرآن ، وكان من حكمته أن جعل منه آيات محكمات محددة المعنى بينة المقاصد ، هى الأصل وإليها المرجع ، وأخر متشابهات يدق معناها على أذهان كثير من الناس ، وتشتبه على غير الراسخين فى العلم ، وقد نزلت هذه المتشابهات لتبعث العلماء على العلم والنظر ودقة الفكر فى الاجتهاد ، وفى البحث فى الدين ، وشأن الزائغين عن الحق أن يتتبعوا ماتشابه من القرآن رغبة فى إثارة الفتنة ، ويؤوّلوها حسب أهوائهم . وهذه الآيات لا يعلم تأويلها الحقّ إلا الله والذين تثبتوا فى العلم وتمكنوا منه ، وأولئك المتمكنون منه يقولون : إنا نوقن بأن ذلك من عند الله ، لا نفرق فى الإيمان بالقرآن بين محكمه ومتشابهه ، وما يعقل ذلك إلا أصحاب العقول السليمة التى لا تخضع للهوى والشهوة .

٨ - وأولئك العلماء العاقلون يقولون : ربنا لاتجعل قلوبنا تنحرف عن الحق بعد إذ أرشدتنا إليه ، وامنحنا اللهم رحمة من عندك بالتوفيق والتثبيت إنك أنت المانع المعطى .

٩ - ربنا إنك جامع الناس ليوم لاشك فيه لتجازى كلاً على ما فعل ، فقد وعدت بذلك وأنت لاتخلف الميعاد .

١٠ - إن الكافرين لن تدفع عنهم فى هذا اليوم أموالهم مهما عظمت ، ولا أولادهم مهما كثرت ، وسيكونون حطبا للنار تشتعل بهم .

7. Он - Тот, кто ниспослал тебе (о Мухаммад!) Коран; и в нём есть точные айаты с определённым и ясным смыслом - это суть Книги; и другие айаты, не такие ясные, требующие специального толкования. Эти айаты побуждают учёных и знатоков Корана к их исследованию и точному толкованию. Те же, сердца которых уклоняются от настоящей веры, объясняют айаты, требующие толкования, по своему желанию, стремясь отклонить людей от истины и вызвать смуту и раскол. Никто не знает совершенно точного объяснения данных айатов, кроме Аллаха. Знатоки же, твёрдые в знаниях, говорят: “Мы знаем, что эти айаты ниспосланы Аллахом, и знаем, что айаты с определённым смыслом и айаты, требующие толкования, одинаковы для руководства". Поминают и вспоминают это только обладатели разума, не подверженные страстям. Те же, сердца которых уклоняются от настоящей веры, объясняют иносказательные айаты, требующие толкования, по своему желанию.

8. Истинные толкователи Корана говорят: "Владыка наш! Не уклоняй наши сердца от истины после того, как Ты вывел нас на прямой путь! Одари нас Своей милостью, ведущей к успехам, и упрочь нашу уверенность! Ведь, поистине, только Ты - Запрещающий и Дающий!

9. Владыка наш! Ты соберёшь людей в День, в котором нет сомнения, чтобы воздать каждому из нас за то, что он сделал. Ты это обещал, и, поистине, Ты не меняешь Своего обещания!"

10. Ни большое имущество, ни дети не защитят тех, кто не уверовал, и нисколько не избавят их от наказания Аллаха. Они будут растопкой для адского огня.

ٱللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَٱللَّهُ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ﴿١١﴾ قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ ٱلْمِهَادُ ﴿١٢﴾
قَدْ كَانَ لَكُمْ ءَايَةٌ فِى فِئَتَيْنِ ٱلْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَٰتِلُ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُم مِّثْلَيْهِمْ رَأْىَ ٱلْعَيْنِ ۚ وَٱللَّهُ يُؤَيِّدُ
بِنَصْرِهِۦ مَن يَشَآءُ ۗ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُو۟لِى ٱلْأَبْصَٰرِ ﴿١٣﴾ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ ٱلشَّهَوَٰتِ مِنَ ٱلنِّسَآءِ وَٱلْبَنِينَ وَٱلْقَنَٰطِيرِ
ٱلْمُقَنطَرَةِ مِنَ ٱلذَّهَبِ وَٱلْفِضَّةِ وَٱلْخَيْلِ ٱلْمُسَوَّمَةِ وَٱلْأَنْعَٰمِ وَٱلْحَرْثِ ۗ ذَٰلِكَ مَتَٰعُ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ وَٱللَّهُ
عِندَهُۥ حُسْنُ ٱلْمَـَٔابِ ﴿١٤﴾ * قُلْ أَؤُنَبِّئُكُم بِخَيْرٍ مِّن ذَٰلِكُمْ ۚ لِلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتٌ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا

١١ - وشأن هؤلاء شأن قوم فرعون والمعادين من قبلهم ، كذَّبوا بآيات الله مع وضوحها فنكَّل الله بهم بسبب ما ارتكبوه من الذنوب ، والله شديد العقاب .

١٢ - قل يأيها النبى لهؤلاء الذين كفروا إنكم فى الدنيا ستهزمون وفى الآخرة ستعذبون ، وتكون جهنم فِراشا وبئس الفِراش .

١٣ - لقد كان لكم آية بيِّنة وعبرة ظاهرة : طائفتان من المحاربين التقتا يوم بدر ، إحداهما مؤمنة تحارب لإعلاء كلمة الله ونشر الحق ، والأخرى كافرة تحارب فى سبيل الأهواء والشهوات ، فكان من تأييد الله للمؤمنين أن جعل الكافرين يرونهم ضعف عددهم الحقيقى ، وبذلك وقع الرعب فى قلوب الكفار فانهزموا ، والله يمنح نصره لمن يشاء . وإن فى ذلك لعبرة لأصحاب البصائر الرشيدة التى لا تنحرف فى إدراكها عن الحق .

١٤ - إن البشر جبلوا على حب الشهوات التى تتمثل فى النساء والبنين والكثرة من الذهب والفضة ، والخيل الحسان المعلَّمة ، والأنعام التى منها الإبل والبقر والغنم ، وتتمثل أيضا فى الزرع الكثير . لكن ذلك كله متاع الحياة الدنيا الزائلة الفانية ، وهو لايعد شيئا إذا قيس بإحسان الله إلى عباده الذين يجاهدون فى سبيله عند أوبتهم إليه فى الآخرة .

11. Деяния этих людей, как деяние рода Фараона и тех, кто был до них. Они не верили в явные знамения Аллаха, и Аллах наказал их за грехи. Ведь Аллах силён и справедлив в наказании!

12. Скажи (о пророк!) тем, которые не уверовали: "Вы будете поражены и побеждены в настоящей жизни. И будете мучительно страдать в аду. Вы будете собраны в геенне огненной - в вашем скверном жилище!"

13. Для вас было ясное знамение и поучительный пример в рассказе о двух отрядах, которые встретились в бою "Бадр": один отряд сражался, следуя по прямому пути Аллаха, руководствуясь Писанием и истиной, а другой - неверный - сражался против Аллаха, против Его Истины, руководствуясь своими страстями. Аллах оказал верующим помощь: они предстали перед взором неверующих вдвое большим числом, чем их было на самом деле Неверующие струсили и были побеждены. Аллах поддерживает Своей помощью того, кого пожелает. Поистине, в этом - явное назидание для тех, которые открывают свой умственный взор.

14. Люди испытывают страстную привязанность к женщинам, к детям, к большому количеству золота и серебра, к породистым коням, к скоту (верблюдам, коровам и овцам), к плодородной земле и посевам. Но всё это - только для пользования и удовольствия в ближайшей, а не в вечной жизни. И ничто не сравнится с милостью Аллаха, который в будущей жизни воздаст тем, кто сражается за Него. Ведь у Аллаха - прекрасная обитель!

ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَٰجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَٰنٌ مِّنَ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ بَصِيرٌۢ بِٱلْعِبَادِ ﴿١٥﴾ ٱلَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَآ إِنَّنَآ ءَامَنَّا فَٱغْفِرْ
لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ ﴿١٦﴾ ٱلصَّٰبِرِينَ وَٱلصَّٰدِقِينَ وَٱلْقَٰنِتِينَ وَٱلْمُنفِقِينَ وَٱلْمُسْتَغْفِرِينَ بِٱلْأَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ
ٱللَّهُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَأُوْلُواْ ٱلْعِلْمِ قَآئِمَۢا بِٱلْقِسْطِ ۚ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿١٨﴾ إِنَّ ٱلدِّينَ
عِندَ ٱللَّهِ ٱلْإِسْلَٰمُ ۗ وَمَا ٱخْتَلَفَ ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلْكِتَٰبَ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ ٱلْعِلْمُ بَغْيَۢا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَن يَكْفُرْ بِـَٔايَٰتِ
ٱللَّهِ فَإِنَّ ٱللَّهَ سَرِيعُ ٱلْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَإِنْ حَآجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِىَ لِلَّهِ وَمَنِ ٱتَّبَعَنِ ۗ وَقُل لِّلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلْكِتَٰبَ

١٥ – قل يا أيها النبى : أأخبركم بما هو خير من ذلك الذى زُيِّن للناس فى الدنيا ؟ ، إن للذين اتقوا ثوابا مضمونا عند ربهم ، هو جنات تجرى من تحت ظلال أشجارها الأنهار ، يتمتعون بالحياة الطيبة فيها لا يساورهم خوف من زوال نعيمها إذ كتب لهم الخلود فيها ، وأزواج طاهرة نقية من كل ما يشين نساء الدنيا ، ورضاء من الله يشعرون فى ظله بنعيم أكبر ، والله مطلع على أحوال عباده لا يخفى عليه أمر أو سر من أمورهم وأسرارهم .

١٦ – ينال هذا الجزاء أولئك الذين ملأ الإيمان قلوبهم وأعلنوا ذلك بألسنتهم فقالوا ــ ضارعين إلى الله ــ : ربنا إننا آمنا استجابة لدعوتك فاعف عن ذنوبنا ، واحفظنا من عذاب النار .

١٧ – والذين يتحملون المشقة فى سبيل الطاعة وتجنب المعصية واحتمال المكروه ، الذين يصدقون فى أقوالهم وأفعالهم ونياتهم ، المداومون على الطاعة فى خشوع وضراعة ، الباذلون مايستطيعون من مال وجاه وغيره فى وجوه التأمل والتفكير فى عظمة الخالق .

١٨ – بيَّن الله – بما بث فى الكون من دلائل وآيات لا ينكرها ذو عقل – أنه واحد لا شريك له ، وأنه قائم على شئون خلقه بالعدل ، وأقرَّت بذلك ملائكته الأطهار ، وَعَلِمَهُ أهل العلم موقنين به ، وأنه ــ جل شأنه ــ المتفرد بالألوهية الذى لا يغلبه أحد على أمره ، وشملت حكمته كل شىء .

١٩ – إن الدين الحق المرضى عند الله هو التوحيد والخضوع لله فى إخلاص ، وقد اختلف كل من اليهود والنصارى فى هذا الدين فحرَّفوا وبدَّلوا ولم يكن اختلافهم عن شبهة أو جهل إذ جاءهم العلم ، بل كان للتحاسد والتطاول ، ومن يجحد بآيات الله فلينتظر حساب الله السريع .

15. Скажи им (о пророк!) "Сообщить ли мне вам про лучшее, чем то, что прельщает людей на этом свете?" Для благочестивых будут райские сады, где внизу текут реки, и они будут там вести добрую блаженную жизнь, не боясь, что Божественное благо кончится: ведь они там пребудут вечно! Там они будут с супругами чистыми, непорочными. Они будут чувствовать в раю любовь Аллаха и Его благоволение. Ведь Аллах знает все дела и тайны Своих рабов, -

16. тех, у которых сердца полны веры, и они, обращаясь к Господу, говорят: "Господи наш! Мы уверовали по Твоему призыву. Прости же нам наши грехи и защити нас от муки огненной!", -

17. тех терпеливых, переносящих тяготы и трудности ради Аллаха, воздерживающихся от грехов, смиряющихся, терпеливых в несчастье, искренних в словах, деяниях и намерениях, смиренных и благоговейных, расходующих деньги и имущество ради Аллаха и просящих прощения у Аллаха на заре.

18. Аллах свидетельствует Своими знамениями, которых разум не может отрицать, что Он Един, и нет божества, кроме Него. Он твёрдо блюдёт справедливость ко всем людям. Его чистые ангелы свидетельствуют об этом. Обладающие знаниями также убеждены в этом. Он - Всевышний, Единый, Непобеждаемый! Его мудрость всё охватывает

19. Поистине, религия Аллаха - ислам: единобожие и искреннее повиновение Аллаху. Иудеи и христиане разошлись по отношению к религии. Они искажали и изменяли её не из-за сомнений и невежества, так как к ним пришло знание, а по зависти и злобе. Те, которые не веруют в знамения Аллаха, должны ждать воздаяния за это. Ведь Аллах быстр в расчёте!

وَالْأُمِّيِّينَ ءَأَسْلَمْتُمْ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوا وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ
يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُم
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢١﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٢٢﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى
الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ إِذَا

٢٠ - فإن جادلك هؤلاء فى هذا الدين بعد أن أقمت لهم الحجج ، فلا تجارهم فى الجدل ، وقل : أخلصت عبادتى لله ــ وحده ــ أنا ومن اتبعنى من المؤمنين ، وقل لليهود والنصارى ومشركى العرب : قد بانت لكم الدلائل فأسلموا ، فإن أسلموا فقد عرفوا طريق الهدى واتبعوه ، وإن أعرضوا فلا تبعة عليك فى إعراضهم ، فليس عليك إلا أن تبلغهم رسالة الله ، والله مطلع على عباده لا يخفى عليه شىء من أحوالهم وأعمالهم .

٢١ - إن الذين يجحدون آيات الله الكونية والمنزّلة ، ويقتلون من بعثهم الله لهدايتهم من الأنبياء ، ولا يكون بحق أبدا ، بل هو أعظم الظلم ، ويقتلون دعاة الناس إلى القسط والعدل يستحقون العذاب الأليم فبشرهم به .

٢٢ - أولئك المتصفون بتلك الصفات بطلت أعمالهم ولو كان بعضها طيبا ، وخلت من ثمراتها فلم تنفعهم فى الدنيا ، وأعقبهم الخزى والنكال فى الآخرة ، وليس هناك من ينقذهم من الخسران والعذاب .

٢٣ - ألم تعلم حال الذين أُعطوا حظا من الكتاب والعلم يدعون إلى كتاب الله وهو القرآن ليفصل الحق من الباطل فيما شجر بينهم من خلاف فلا يسارعون إلى إجابة الداعى ، بل يعرض عنه فريق منهم شأنه الإعراض عن دعوة الخير .

٢٤ - إن أولئك المعرضين من اليهود زيَّن لهم ذلك الإعراض أنهم يُمنُّون أنفسهم بالأمانى الباطلة ، فيزعمون أن النار لن تمسهم إلا أياما معدودات ودفعهم إلى ذلك الغرور وتلك الأمانى افتراءاتهم المستمرة فى دينهم .

20. А если они станут спорить и препираться с тобой (о Мухаммад!) об этой религии после того, как ты уже указал на знамения Аллаха, не продолжай с ними спор и прения, а скажи им: "Я и те, которые за мной последовали, верим только в Аллаха". Скажи иудеям, христианам и неверующим из арабов: "Знамения Аллаха уже ясны, признавайте ислам!" Если они признают исламскую религию, то будут на прямом пути Аллаха, а если они отвратятся, то ты не отвечаешь за это. Твоё дело - передача Писания Аллаха. Аллах знает Своих рабов, их мысли и что они делают!

21. Тех, которые не веруют во вселенские знамения Аллаха и несправедливо убивают пророков, а также тех, которые призывают людей к справедливости, - этих неверующих ожидает жестокое возмездие. Возвести им (о Мухаммад!) о мучительном наказании!

22. Это - те, дела которых, даже если поначалу и шли хорошо, в конечном счёте оказались бесполезными, тщетными, бесплодными в ближайшей жизни, и в будущей жизни их ждёт стыд и наказание и не будет им ни помощников, ни спасителей от наказания и мучений.

23. Разве ты не знаешь (о Мухаммад!) о тех, которым была дана часть Священного Писания и знания? Их призывают к Корану - Писанию Аллаха, который отличает истину от лжи, чтобы он разрешил споры между ними. Они не откликнулись на этот верный призыв, а некоторые из них даже отвратились от него, отклонившись от призыва к благу и прямому пути.

24. Эти отвратившиеся, из иудеев, имели ложную надежду на то, что огонь никогда не коснётся их, а если коснётся, то всего лишь на несколько дней. Причиной тому их гордыня и обольщение оттого, что они постоянно искажали свою религию.

جَمَعْنَٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥﴾ قُلِ ٱللَّهُمَّ مَٰلِكَ ٱلْمُلْكِ تُؤْتِى ٱلْمُلْكَ
مَن تَشَآءُ وَتَنزِعُ ٱلْمُلْكَ مِمَّن تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَآءُ بِيَدِكَ ٱلْخَيْرُ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾
تُولِجُ ٱلَّيْلَ فِى ٱلنَّهَارِ وَتُولِجُ ٱلنَّهَارَ فِى ٱلَّيْلِ وَتُخْرِجُ ٱلْحَىَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ ٱلْمَيِّتَ مِنَ ٱلْحَىِّ وَتَرْزُقُ مَن تَشَآءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَّا يَتَّخِذِ ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلْكَٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ ٱللَّهِ

٢٥ - فكيف يكون حالهم وقت أن يجمعهم الله فى الآخرة التى لا شك فى وجودها ولا حسابها فكل نفس تعطى جزاءها فيها وافيا ، وهم جديرون بما ينالهم من عذاب الجحيم .

٢٦ - قل - يا أيها النبى - ضارعا إليه مقرا بجبروته : اللهم أنت ــ وحدك ــ مالك التصرف فى الأمر كله ، تمنح من تشاء من الحكم والسلطان ، وتنزعه ممن تشاء ، وتهب العزة من تريد من عبادك بتوفيقه إلى الأخذ بأسبابها ، وتضرب الذل والهوان على من تشاء ، فأنت ــ وحدك ــ تملك الخير ، لا يعجزك شىء عن تنفيذ مرادك ، وما تقتضيه حكمتك فى نظام خلقك .

٢٧ - وأنت بما أنشأت ووضعت من الأسباب والسنن ، تُدخِل من الليل فى النهار ما يزيد به النهار طولا ، وتدخل من النهار فى الليل ما يزيد به الليل طولا ، وتخرج المتصف بمظاهر الحياة من فاقدها ، كما تخرج فاقد الحياة من الحى المتمكن من أسباب الحياة ، وتهب عطاءك الواسع من تشاء كما تريد على نظام حكمتك ، فلا رقيب يحاسبك ، ومن كان هذا شأنه لا يعجزه أن يمنح رسوله وأصفياءه السيادة والسلطان والغنى واليسار كما وعدهم[1] .

---

(١) « دورة الحياة والموت هى معجزة الكون وسر الحياة نفسها ، والسمات الرئيسية فى هذه الدورة أن الماء وثانى أكسيد الكربون والنتروجين والأملاح غير العضوية فى التربة تتحول بفضل طاقة الشمس والنباتات الخضراء وأنواع معينة من البكتريا إلى مواد عضوية هى مادة الحياة فى النبات والحيوان . أما فى الشق الثانى من هذه الدورة فتعود هذه المواد إلى عالم الموت فى صورة نفايات الأحياء ونواتج أيضها وتنفسها .

ثم فى صورة أجسامها كلها عندما تموت وتستسلم لعوامل التحلل البكتيرى والكيماوى التى تحيلها إلى مواد غير عضوية بسيطة مهيأة للدخول فى دورة جديدة من دورات الحياة ، وهكذا فى كل لحظة من الزمان يخرج الخالق القدير حياة من الموت وموتا من الحياة وهذه الدورة المتكررة لا تتم إلا فى وجود كائن أودعه الله سر الحياة كبذرة النبات مثلا .

والآية الكريمة تذكر أولى الألباب بالمعجزة الأولى وهى خلق الحياة من مادة الأرض الميتة ثم تكرار الدورة كما سبق . وهكذا جاء فى الآية الكريمة إخراج الحى من الميت سابقا لإخراج الميت من الحى وهذا هو الإعجاز بعينه » .

25. Каково же будет их состояние, когда Аллах соберёт их в День Суда, в котором нет сомнения, и каждая душа сполна примет воздаяние за то, что она приобрела. И будет им ад - место вечных мук!

26. Скажи (о пророк!): "О Владыка, только Ты - Всемогущий над всем - Царь царства! Ты даруешь власть, кому пожелаешь, и лишаешь власти, кого пожелаешь. Ты возвеличиваешь, кого пожелаешь из Своих рабов, указывая ему на прямой путь к величию, и обходишь и унижаешь тех, кого пожелаешь. Поистине, в Твоей руке - благо. Ты властен над каждой вещью, ничто не препятствует Твоему желанию и Твоей мудрости по отношению к Твоему творению - Твоим рабам!

27. Ты установил Свои законы и правила, по которым Ты вводишь часть ночи в день, удлиняя день, и вводишь часть дня в ночь, удлиняя ночь, и Ты выводишь живое из мёртвого и мёртвое из живого. Ты щедро даруешь, кому пожелаешь, по законам Твоей мудрости. Никто не может ни наблюдать за Тобой, ни судить Тебя. Ты - Тот, который обладает силой и мощью, чтобы одарить Своего посланника и избранников господством, властью, богатством и благом, как обещал!

فِي شَيْءٍ إِلَّآ أَن تَتَّقُواْ مِنْهُمْ تُقَىٰةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ ٱللَّهُ نَفْسَهُۥ ۗ وَإِلَى ٱللَّهِ ٱلْمَصِيرُ ﴿٢٨﴾ قُلْ إِن تُخْفُواْ مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ
تُبْدُوهُ يَعْلَمْهُ ٱللَّهُ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلْأَرْضِ ۗ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا وَمَا عَمِلَتْ مِن سُوٓءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُۥٓ أَمَدًا بَعِيدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ ٱللَّهُ نَفْسَهُۥ ۗ وَٱللَّهُ رَءُوفٌۢ بِٱلْعِبَادِ ﴿٣٠﴾

٢٨ - إذا كان الله ــ سبحانه وتعالى ــ هو ــ وحده ــ مالك الملك ، ويعز ويذل ، وبيده وحده الخير والخلق والرزق ، فلا يصح للمؤمنين أن يجعلوا لغير المؤمنين ولاية عليهم ، متجاوزين نصرة المؤمنين ؛ لأن فى هذا خذلانا للدين وإيذاء لأهله ، وإضعافا للولاية الإسلامية ، ومن يسلك هذا المسلك فليس من ولاية الله مالك الملك فى شىء ، ولا يرضى مؤمن بولايتهم إلا أن يكون مضطرا لذلك ، فيتقى أذاهم بإظهار الولاء لهم . وعلى المؤمنين أن يكونوا فى الولاية الإسلامية دائما وهى ولاية الله ، وليحذروا أن يخرجوا إلى غير ولايته ، فيتولى عقابهم بنفسه بكتابة الذلة عليهم بعد العزة . وإليه ــ وحده ــ المصير فلا مفرَّ من سلطانه فى الدنيا ولا فى الآخرة .

٢٩ - قل - ياأيها النبى - إن تخفوا ما فى صدوركم أو تظهروه فى أعمالكم وأقوالكم فإن الله يعلمه ، ويعلم جميع ما فى السموات وما فى الأرض ما ظهر منه وما استتر ، وقدرته نافذة فى جميع خلقه .

٣٠ - فليحذر الذين يخالفون أمره يوم تجد كل نفس عملها من الخير مهما قلَّ مشاهدا حاضرا ، وما اقترفته من سوء تتمنى أن يكون بعيدا عنها بُعْداً شاسعا حتى لا تراه استقباحا له وخوفا من الوقوع فى مغبتّه ، ويحذركم الله عقابه إذا خرجتم من ولايته التى هى رأفة ورحمة بالعباد .

28. Слава Аллаху Всевышнему, Полновластному Царю царства! Он возвеличивает, кого пожелает, и унижает, кого пожелает. Только в Его руках благо, творение и удел. Верующие не должны брать друзьями и покровителями неверных, минуя верных. Таким образом они лишают поддержки верных исламской религии. Верующие во избежание вреда не должны принимать опеку от неверующих, за исключением тех случаев, которые диктуются необходимостью. Верующему нужно принимать исламскую опеку от Аллаха. И нельзя нарушать этот наказ Аллаха, иначе Аллах накажет за это, и будет им позор и поражение после славы. Ведь к Аллаху Единому все возвратятся. Всё находится в Его власти в ближайшей жизни и в будущей!

29. Скажи им всем (о Мухаммад!): "Если вы таите то, что в ваших сердцах, или обнаруживаете это в ваших поступках и словах, Аллах знает это. Ведь Аллах знает всё то, что в небесах и на земле, всё то, что видно, и то, что скрыто. Аллах над всякой вещью и над Своими рабами мощен!

30. И пусть остерегаются те, которые не повинуются Аллаху, Дня, в который перед каждой душой предстанет то, что она сделала доброго, и то, что она свершила злого. Тогда она захочет, чтобы между ней и этим злом было большое расстояние, чтобы не видеть его, осуждая это зло и боясь последствий его. Аллах предостерегает вас от Своего наказания, которое неминуемо, если свернёте с прямого пути, который указан Им. Поистине, Аллах добр и милостив к Своим рабам!"

قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِى يُحْبِبْكُمُ ٱللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣١﴾ قُلْ أَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ
وَٱلرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ لَا يُحِبُّ ٱلْكَـٰفِرِينَ ﴿٣٢﴾ * إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰٓ ءَادَمَ وَنُوحًا وَءَالَ إِبْرَٰهِيمَ وَءَالَ عِمْرَٰنَ
عَلَى ٱلْعَـٰلَمِينَ ﴿٣٣﴾ ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنۢ بَعْضٍ ۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾ إِذْ قَالَتِ ٱمْرَأَتُ عِمْرَٰنَ رَبِّ إِنِّى نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِى بَطْنِى مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىٓ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّى وَضَعْتُهَآ أُنثَىٰ

٣١ - قل : إن كنتم صادقين فى دعواكم أنكم تحبون الله وتريدون أن يحبكم الله فاتبعونى فيما آمركم به وأنهاكم عنه ، لأننى مبلغ عن الله ، فإن ذلك يحبكم الله به ، ويثيبكم الله عليه بالإحسان إليكم والتجاوز عن خطاياكم ، والله كثير الغفران والرحمة لعباده .

٣٢ - قل : أطيعوا الله ورسوله ، فإن أعرضوا عنك فهم كافرون بالله ورسوله ، والله لا يحب الكافرين .

٣٣ - كما اصطفى الله محمدا لتبليغ رسالته ، وجعل اتباعه وسيلة لحب الله ومغفرته ورحمته ، ذكر أنه اصطفى آدم وجعله من صفوة العالمين ، واصطفى نوحا بالرسالة ، واصطفى إبراهيم وآله اسماعيل وإسحاق والأنبياء من أولادهما ، ومنهم موسى ــ عليهم السلام ــ ، واختار آل عمران واختار منهم عيسى وأمه ، فعيسى جعله الله رسولا لبنى اسرائيل ، ومريم جعلها أما لعيسى من غير أب .

٣٤ - اختارهم ذرية طاهرة ، فهم يتوارثون الطهر والفضيلة والخير . والله سميع لأقوال عباده عليم بأفعالهم وما تكنه صدورهم .

٣٥ - واذكر ــ أيها النبى ــ حال امرأة عمران إذ نذرت وقت حملها تقديم ما تحمله خالصا لعبادة الله وخدمة بيته ، قائلة يارب : إنى نذرت مافى بطنى خالصا لخدمة بيتك فاقبل منى ذلك ، إنك السميع لكل قول ، العليم بكل حال .

31. Скажи им (о Мухаммад!): "Если вы искренне любите Аллаха и желаете, чтобы Он вас любил, то следуйте за мной в том, что я вам приказываю, и не делайте того, что я вам запрещаю. Ведь я передаю ниспосланное мне Писание Аллаха. Аллах будет за это вас любить и простит все ваши прегрешения. Поистине, Аллах - прощающий, милосердный к Своим рабам!"

32. Скажи им (о Мухаммад!): "Повинуйтесь Аллаху и Его посланнику". Если они отвернутся от тебя, тогда они не верят в Аллаха и Его посланника. Аллах не любит неверных!

33. Аллах избрал Мухаммада - да благословит его Аллах и приветствует! - для передачи людям Его Послания и указал, что повиновение Мухаммаду - да благословит его Аллах и приветствует! - путь к любви, прощению и милости Аллаха. Аллах избрал также пророками и посланниками Адама и Нуха, и род Ибрахима, и Исмаила, Исхака и пророков из их сыновей, из них Муса - да будет мир им! Аллах избрал их всех перед мирами. И избрал Господь также семейство Имрана, а из него Ису и его мать. Аллах послал Ису к сынам Исраила. Аллах сделал Марйам матерью Исы без отца.

34. Аллах избрал это чистое потомство, которое наследует друг от друга непорочность, чистоту, достоинство и добро. Аллах слышит Своих рабов, знает их поступки и тайны в их сердцах!

35. Вспомни (о Мухаммад!) жену Имрана, когда она дала обет посвятить Аллаху то, что у неё было во чреве, чтобы он повиновался и служил Аллаху. Она сказала: "Господи! Я отдаю Тебе то, что у меня во чреве. Прими же от меня; ведь Ты слышишь все просьбы и знаешь все дела!"

وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ ٱلذَّكَرُ كَٱلْأُنثَىٰ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّيٓ أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ
ٱلرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا ٱلْمِحْرَابَ
وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا قَالَ يَٰمَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ إِنَّ ٱللَّهَ يَرْزُقُ مَن يَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾
هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُۥ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ ٱلدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾ فَنَادَتْهُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَهُوَ
قَآئِمٌ يُصَلِّي فِي ٱلْمِحْرَابِ أَنَّ ٱللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٣٩﴾

٣٦ - فلما وضعت حملها قالت ــ معتذرة تناجى ربها ــ : إنى وَلَدت أنثى والله عليم بما ولدت ، وأن مولودها وهو أنثى خير من مطلوبها وهو الذكر . وقالت : إنى سميتها مريم وإنى أسألك أن تحصّنها هى وذريتها من غواية الشيطان الرجيم .

٣٧ - فتقبل الله مريم نذرا لأمها ، وأجاب دعاءها ، فأنبتها نباتا حسنا ، وربّاها فى خيره ورزقه وعنايته تربية حسنة مقومة لجسدها ، وشأنه أن يرزق من يشاء من عباده رزقا كثيرا ، كلما دخل عليها زكريا فى معبدها وجد عندها رزقا غير معهود فى وقته . قال ــ متعجبا ــ : يامريم من أين لك هذا الرزق ؟ قالت : هو من فضل الله ، وجعل زكريا ــ عليه السلام ــ كافلا لها . وكان رزقها بغير عدد ولا إحصاء .

٣٨ - لما رأى زكريا ــ عليه السلام ــ ما رآه من نعمة الله على مريم ، اتجه إلى الله ضارعا أن يهبه من فضله وكرمه وبقدرته ولدا ، فهو يسمع دعاء الضارعين ، وهو القدير على الإجابة وإن وقفت الأسباب العادية من شيخوخة أو عقم دون تحقيقها .

٣٩ - فاستجاب الله دعاءه ، فنادته الملائكة وهو قائم فى معبده متجها إلى ربه ، بأن الله يبشرك بولد اسمه يحيى ، يؤمن بعيسى ــ عليه السلام ــ الذى سيوجد بكلمة من الله فيكون على غير السُّنّة العامة فى التوالد ، ويجعله (أى يحيى) يسود قومه بالعلم والصلاة ، يعزف عن الشهوات والأهواء ، ويجعله من الأنبياء والصالحين .

36. Когда она разрешилась от бремени, она извинилась перед Господом, сказав: " Вот я родила её - женского пола". - А Аллах знал, кого она родила, и знал, что этот ребёнок женского пола будет лучше, чем ребёнок мужского пола, которого она хотела бы иметь. - " Я назвала её Марйам и прошу защитить её и её потомство от шайтана, изгнанного, проклятого и побиваемого камнями".

37. И Аллах, ответив на её молитву, благосклонно принял Марйам, как просила мать. Аллах возрастил её хорошим ростом, дал ей в удел благо и уделил ей заботу - ведь Аллах даёт большой удел тем из Своих рабов, которым Он пожелает. Всякий раз, как Закарийа (Захария), кому было поручено попечение о Марйам, входил к ней в молельню, он находил перед ней пищу. Он спросил, удивляясь: "Марйам, откуда у тебя эта пища?" Она сказала: "Это от Аллаха". Поистине, Он даёт много в удел, кому пожелает, без счёта!

38. Увидев удел, данный Аллахом Марйам, Закарийа в молельне воззвал к Аллаху: "Господи! Дай мне от Тебя, по Твоему достоинству и щедрости, сына благого. Ведь Ты - слышащий молитву просящих!" Поистине, Аллах слышит наши молитвы и отвечает на них, несмотря на естественные помехи: старость или бесплодие.

39. Аллах ответил на его молитву, когда он стоял в молельне, обращаясь к Своему Господу. Ангелы возгласили ему: "Аллах радует тебя вестью о рождении Йахйи (Иоанна). Он уверует в Ису - да будет мир ему, - который будет сотворён Словом Аллаха. Йахйа займёт выдающееся место среди своего народа своими знаниями, богобоязненностью и молитвой. Он будет воздержанным, мудрым пророком, одним из числа праведных".

قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَٰمٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ ٱلْكِبَرُ وَٱمْرَأَتِي عَاقِرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكَ ٱللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ ٱجْعَل
لِّيٓ ءَايَةً ۖ قَالَ ءَايَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ ٱلنَّاسَ ثَلَٰثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ۗ وَٱذْكُر رَّبَّكَ كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِٱلْعَشِيِّ وَٱلْإِبْكَٰرِ ﴿٤١﴾
وَإِذْ قَالَتِ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ يَٰمَرْيَمُ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰكِ وَطَهَّرَكِ وَٱصْطَفَىٰكِ عَلَىٰ نِسَآءِ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٤٢﴾ يَٰمَرْيَمُ ٱقْنُتِي لِرَبِّكِ
وَٱسْجُدِي وَٱرْكَعِي مَعَ ٱلرَّٰكِعِينَ ﴿٤٣﴾ ذَٰلِكَ مِنْ أَنۢبَآءِ ٱلْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ أَقْلَٰمَهُمْ
أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ وَمَا كُنتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٤﴾ إِذْ قَالَتِ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ يَٰمَرْيَمُ إِنَّ ٱللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ٱسْمُهُ
ٱلْمَسِيحُ عِيسَى ٱبْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ وَمِنَ ٱلْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٥﴾ وَيُكَلِّمُ ٱلنَّاسَ فِي ٱلْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ

٤٠ – ولما سيقت إليه هذه البشرى ، اتجه إلى ربه متشوقا إلى معرفة الكيفية التى يكون بها هذا الغلام ، مع عدم توافر الأسباب العادية لكبر سنه وعقم زوجه ، ورد الله عليه بأنه متى شاء أمرا أوجد له سببه ، أو خلقه بغير الأسباب المعروفة . فهو يفعل مايشاء .

٤١ – فدعا زكريا ربه أن يجعل له علامة لتحقق هذه البشرى ، فأجابه الله بأن علامتك أن تعجز عن كلام الناس ثلاثة أيام إلا بالإشارة إليهم بما تريد ، وثابر على ذكر ربك وتنزيهه فى المساء والصباح .

٤٢ – واذكر ــ أيها النبى ــ إذ قالت الملائكة : يامريم إن الله اختارك لتكونى أم نبيه ، وطهرك من كل دنس ، وخصك بأمومتك لعيسى بفضل على كل نساء العالمين .

٤٣ – وهذا يامريم يستوجب منك الشكر لربك ، فالزمى طاعته ، وصلى له ، وشاركى الذين يعبدونه ويصلون له .

٤٤ – ذلك الذى قصه القرآن عليك يامحمد من الأخبار العظيمة عَمَّن اصطفاهم الله ، هو من الغيب الذى أوحى الله به إليك . وماكنت حاضرا معهم وهم يقترعون بالسهام ليعلم بالقرعة من يقوم بشئون مريم ، وما كنت معهم وهم يختصمون فى نيل هذا الشرف العظيم .

٤٥ – اذكر – أيها النبى – إذ بشرت الملائكة مريم بمولود خلقه الله بكلمة منه على غير السُّنَّة العادية فى التوالد ، اسمه المسيح عيسى ابن مريم ، وقد خلقه الله ذا مكانة فى الدنيا بالنبوة والبراءة من العيوب ، وفى الآخرة بعلو درجته مع الصفوة المقربين إلى الله من النبيين أولى العزم .

40. Услышав эту весть, Закарийа обратился к Аллаху с просьбой разъяснить, как у него может быть мальчик, когда его уже постигла старость, а жена его неплодна. Аллах ему ответил, что как Он пожелает, так и будет. Он сотворит его. Ведь Аллах творит, что пожелает!

41. Закарийа воззвал к Аллаху: "Господи! Яви мне какое-нибудь знамение, что эта весть осуществится!" Аллах ему ответил, что знамением ему будет то, что он в течение трёх дней будет объясняться с людьми только знаками, а не словами. Он должен неустанно поминать Аллаха и воздавать Ему хвалу вечером и утром.

42. Вспоминай (о пророк!), что ангелы сказали: "О Марйам! Аллах избрал тебя матерью Исы. Он очистил тебя и предпочёл тебя всем женщинам миров.

43. О Марйам! Благодари Господа твоего, прояви своё благоговение перед Ним, пади ниц перед Ним, поклоняйся с поклоняющимися и молись Ему".

44. Этот рассказ об одном из великих событий, который Мы поведали тебе, о Мухаммад, об избранных Нами - из рассказов о сокровенном, которое Мы тебе открыли. Ты не был среди них, когда они бросали свои стрелы как жребий, чтобы узнать, кто из них будет заботиться о Марйам.

45. Помни, о пророк, как ангелы радовали Марйам вестью о рождённом, который был сотворён Словом Аллаха, имя которого Мессия Иса, сын Марйам. Он будет славен в сей жизни как пророк благородный и в последней жизни будет вместе с избранными пророками в числе приближённых к Аллаху.

الصَّٰلِحِينَ ﴿٤٦﴾ قَالَتْ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكِ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا
يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾ وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنِّي
قَدْ جِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ أَنِّي أَخْلُقُ لَكُم مِّنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُبْرِئُ
الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ
إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ ۚ وَجِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن
رَّبِّكُمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٥٠﴾

٤٦ – وميَّزه الله بخصائص ، فكان يكلم الناس وهو طفل فى مهده كلاما مفهوما حكيما ، كما يكلمهم وهو رجل سوى ، من غير تفاوت بين حالتى الطفولة والكهولة . وكان ممن منحهم الله الصلاح .

٤٧ – قالت مريم ــ متعجبة من وجود الولد على غير نظام التوالد ــ : من أين يكون لى ولد ولم يمسسنى رجل ؟ فذكر الله تعالى لها أن الله يخلق ما يشاء بقدرته غير مقيد بالأسباب العادية ، فإنه إذا أراد شيئا أوجده بتأثير قدرته فى مراده من غير افتقار إلى موجب آخر .

٤٨ – والله يُعلِّم هذا الوليد الكتابة ، والعلم الصحيح النافع ، والتوارة (كتاب موسى) والإنجيل الذى أوحاه الله إليه .

٤٩ – ويبعثه رسولا إلى بنى إسرائيل ، مستدلا على صدق رسالته بمعجزات من الله ، هى أن يصور لكم من الطين صورة مثل صورة الطير ، ينفخ فيها فتحل فيها الحياة وتتحرك طائرا بإرادة الله ، ويشفى بتقدير الله من وُلِد أعمى فيبصر ، ومن به برص فيزول برصه ، ويعيد الحياة إلى من فقدها . كل ذلك بإذن الله وإرادته ، ويخبرهم بما يدَّخرون فى بيوتهم من مأكول وغيره ، ويقول لهم : إن هذه الآيات التى أظهرها الله على يدىَّ حجة على أن رسالتى حق إن كنتم ممن يذعنون له ويصدقون به .

٥٠ – وأرسلت إليكم مصدقا لشريعة التوراة التى نزلت على موسى ولأبيح لكم بأمر الله بعض ما حُرِّم عليكم من قبل ، وقد جئتكم بآية من الله على صدق رسالتى . فاتقوا الله وأطيعون .

46. Аллах наделит его особыми способностями и достоинствами. Так, он будет говорить так же ясно и мудро с людьми, ещё находясь в колыбели, как будет с ними говорить, став взрослым, и будет одним из праведников.

47. Удивляясь, что у неё родится ребёнок необычным способом, Марйам спросила: "Господи! Откуда будет у меня ребёнок, когда не касался меня ни один мужчина?" Аллах ответил ей, что сотворит его Своею мощью, по Своему желанию. Когда Он пожелает что-нибудь, Он сотворит это Своим могуществом. Когда Он присудит быть чему-либо, то скажет только: "Будь!" - и оно бывает.

48. Аллах научит его писанию, мудрости, полезным знаниям, Торе, ниспосланной Мусе, и Евангелию, которое Аллах ему внушит.

49. Аллах сделает его посланником к сынам Исраила. Он докажет это знамениями от Аллаха. Он сотворит из глины образ птицы и дунет в него, и будет он птицей по изволению Аллаха. Он исцелит слепого от рождения, прокажённого и оживит мёртвого с дозволения Аллаха. Он скажет им, что они едят и что откладывают на хранение в своих домах. Он им скажет: "Эти знамения - знамения от Аллаха, свидетельствующие об истинности моей миссии, если вы верующие.

50. Я был ниспослан к вам, чтобы подтвердить истинность того, что было ниспослано Мусе в Торе до меня, и разрешить вам по изволению Аллаха часть того, что было вам запрещено раньше. Я пришёл к вам со знамениями об истинности моего послания. Побойтесь же Аллаха и повинуйтесь мне!

إِنَّ ٱللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَٱعْبُدُوهُ هَٰذَا صِرَٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٥١﴾ * فَلَمَّآ أَحَسَّ عِيسَىٰ
مِنْهُمُ ٱلْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِىٓ إِلَى ٱللَّهِ ۖ قَالَ ٱلْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ ٱللَّهِ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَٱشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾ رَبَّنَآ
ءَامَنَّا بِمَآ أَنزَلْتَ وَٱتَّبَعْنَا ٱلرَّسُولَ فَٱكْتُبْنَا مَعَ ٱلشَّٰهِدِينَ ﴿٥٣﴾ وَمَكَرُوا۟ وَمَكَرَ ٱللَّهُ ۖ وَٱللَّهُ خَيْرُ ٱلْمَٰكِرِينَ ﴿٥٤﴾ إِذْ قَالَ ٱللَّهُ
يَٰعِيسَىٰٓ إِنِّى مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَجَاعِلُ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوكَ فَوْقَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِلَىٰ يَوْمِ
ٱلْقِيَٰمَةِ ۖ ثُمَّ إِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾ فَأَمَّا ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا

٥١ - لأن الله مفيض علىّ وعليكم ألوان إحسانه ، فربَّانى وربَّاكم ، فأخلصوا العبادة له ، فإن هذا هو الطريق الذى لا عوج فيه .

٥٢ - ولما جاء عيسى ــ عليه السلام ــ دعا قومه إلى الصراط المستقيم ، فأبى أكثرهم ، فلما علمَ منهم ذلك اتجه إليهم مناديا : من يناصرنى فى هذا الحق الذى أدعو إليه ؟ فأجابه خاصة المؤمنين بالله وبه : نحن نؤيدك وننصرك لأنك داع إلى الله ، واشهد بأنا مخلصون لله منقادون لأمره .

٥٣ - ونحن نقول : ياربنا ، صدَّقنا بكتابك الذى أنزلته على نبيك ، وامتثلنا أمر رسولك عيسى ــ عليه السلام ــ فاثبتنا من الشاهدين لرسولك بالتبليغ ، وعلى بنى إسرائيل بالكفر والجحود .

٥٤ - أما الجاحدون فقد دَبَّروا تدبيرا خفيا يحاربون به دعوة عيسى ، فأبطل الله كيدهم فلم ينجحوا فيما أرادوا ، والله أحكم المدبرين وأقواهم .

٥٥ - واذكر ــ أيها النبى ــ إذ قال الله ياعيسى إنى مستوف أجلك ، ولا أمكِّن أحدا من قتلك ، وإنى رافعك إلى محل كرامتى ، ومنجيك من أعدائك الذين قصدوا قتلك ، وجاعل المتبعين لك ، الذين لم ينحرفوا عن دينك ظاهرين بالقوة والسلطان على الذين لم يهتدوا بهديك إلى يوم القيامة ، ثم إلَىَّ مصيركم فى الآخرة فأقضى بينكم فى الذى تنازعتم فيه من أمر الدين .

51. Аллах передал мне и вам Своё благо и милосердие. Аллах - мой Владыка и ваш Владыка. Искренне поклоняйтесь Ему: это - прямой путь!"

52. Когда Иса - да будет мир ему! - был послан, он призвал свой народ к праведному пути Аллаха. Большинство из них не отозвались на его призыв. Увидев это, он обратился к ним, спрашивая: "Кто будет моими помощниками на пути Господнем?" Апостолы, которые уверовали в Аллаха и в него, ответили: "Мы - твои сторонники, поддерживаем тебя, потому что ты призываешь нас к пути Аллаха. Мы уверовали в Аллаха. Засвидетельствуй, что мы искренне преданы Аллаху и праведному пути Аллаха.

53. Мы говорим: "Господи наш, наш Творец! Мы уверовали в Писание, ниспосланное Тобой Твоему посланнику, и последовали за Твоим посланником Исой - мир ему! Запиши же нас свидетельствующими о том, что Твой посланник действительно доставил нам Писание, и о том, что сыны Исраила не уверовали в него".

54. Неверные строили тайные козни, отвергнув призыв Исы идти по прямому пути. Но Аллах разрушил их козни, и была им неудача в том, к чему они стремились. Поистине, Аллах сильнее и мудрее всех хитрецов!

55. Помни (о Мухаммад!), как сказал Аллах: "О Иса! Я упокою тебя и не разрешу никому тебя убить, потом вознесу тебя к Себе и спасу тебя от твоих врагов, намеревающихся тебя убить. Я сделаю тех, кто последовал за тобой и не отступил от твоей религии, силой и властью выше тех, которые не веровали, до Дня воскресения, когда вы ко Мне будете возвращены. И Я рассужу между вами относительно того, в чём вы разногласили.

فِي ٱلدُّنْيَا وَٱلْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّٰصِرِينَ ﴿٥٦﴾ وَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ
ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٥٧﴾ ذَٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ ٱلْءَايَٰتِ وَٱلذِّكْرِ ٱلْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾ إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ ٱللَّهِ كَمَثَلِ ءَادَمَ ۖ خَلَقَهُۥ
مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ ٱلْمُمْتَرِينَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيهِ مِنۢ بَعْدِ
مَا جَآءَكَ مِنَ ٱلْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا۟ نَدْعُ أَبْنَآءَنَا وَأَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل
لَّعْنَتَ ٱللَّهِ عَلَى ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿٦١﴾ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ ٱلْقَصَصُ ٱلْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا ٱللَّهُ ۚ وَإِنَّ ٱللَّهَ لَهُوَ ٱلْعَزِيزُ

٥٦ – فأما الجاحدون ، فأذيقهم عذاب الخزى والنكال بتسليط الأمم عليهم فى الدنيا ولعذاب الآخرة أشد وأخزى . وليس لهم من ينقذهم من عذاب الله .

٥٧ – وأما المهتدون بهدى الله ، العاملون على سنن الخير ، فيعطيهم الله جزاء أعمالهم وافيا . وشأن الله أنه لا يمنح ثوابه المتجاوزين لحدود الله الطاغين على دعوته وإحسانه ، ولا يرفع لهم قدرا .

٥٨ – ذلك الذى قصصناه عليك من الحجج الدالة على صدق رسالتك ، هو من القرآن الكريم المشتمل على العلم النافع .

٥٩ – ضلَّ قوم فى أمر عيسى ، فزعموا أنه ابن الله لأنه ولد من غير أب ، فقال الله لهم : إن شأن عيسى فى خلقه من غير أب كشأن آدم فى خلقه من تراب من غير أب ولا أم ، فقد صوَّره وأراد أن يكون فكان بشرا سويا .

٦٠ – هذا البيان فى خلق عيسى هو الصدق الذى بين الواقع بأخبار رب الوجود فدم على يقينك ، ولا تكن من الشاكين .

٦١ – فمن جادلك ــ ياأيها النبى ــ فى شأن عيسى من بعد ماجاءك من خبر الله الذى لا شبهة فيه ، فقل لهم : قولا يظهر علمك اليقينى وباطلهم الزائف ، تعالوا يدع كل منَّا ومنكم أبناءه ونساءه ونفسه ، ثم نضرع إلى الله أن يجعل غضبه ونقمته على من كذب فى أمر عيسى من كونه خلق من غير أب وأنه رسول الله وليس ابن الله .

56. Тех, которые не уверовали, Я сурово накажу и направлю народы против них в ближайшей жизни. А в будущей жизни им не будет ни помощников, ни спасителей от наказания Аллаха.

57. Тех, которые уверовали, пошли по прямсму пути Аллаха и творили благое, Аллах вознаградит сполна; ведь Аллах не вознаграждает преступивших Его заповеди и не внимающих Его призывам идти по прямому пути!

58. То, что Мы рассказали тебе (о Мухаммад!), из знамений, указывающих на истинность твоего послания, из - Священного Корана, содержащего мудрые знания.

59. Некоторые люди неправильно понимают, как родился Иса, и говорят, что он сын Аллаха, потому что он рождён без отца. Аллах им сказал: "Иса подобен Адаму, которого Я сотворил из праха без отца и без матери". Создав его, Аллах сказал: "Будь!" - и он стал.

60. Это абсолютная истина, объявленная Аллахом, Творцом миров, относительно появления Исы. Будь уверен в этой истине. И не будь в числе сомневающихся!

61. А если кто будет препираться с тобой (о пророк!) относительно этого после того, как пришло к тебе не подлежащее сомнению знание от Аллаха, скажи ему слово, которое докажет твою уверенность и разоблачит их лживый вымысел: "Приходите, призовём наших сынов и ваших сынов, наших женщин и ваших женщин, и нас самих, и вас самих, а потом попросим Аллаха направить гнев и проклятие на лжецов, искажающих истину о происхождении Исы, - о том, что он был сотворён без отца, и что он - посланник Аллаха, а не сын Его".

ٱلْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾ فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌۢ بِٱلْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾ قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ تَعَالَوْا۟ إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ
أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِۦ شَيْـًٔا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّن دُونِ ٱللَّهِ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَقُولُوا۟ ٱشْهَدُوا۟ بِأَنَّا
مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تُحَآجُّونَ فِىٓ إِبْرَٰهِيمَ وَمَآ أُنزِلَتِ ٱلتَّوْرَىٰةُ وَٱلْإِنجِيلُ إِلَّا مِنۢ بَعْدِهِۦٓ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٥﴾
هَٰٓأَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ حَٰجَجْتُمْ فِيمَا لَكُم بِهِۦ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُم بِهِۦ عِلْمٌ ۚ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾

٦٢ - وذلك هو الحق الذى لا مرية فيه ، فليس فى الوجود إله إلا الله الذى خلق كل شىء وأنه هو المنفرد بالعزة فى ملكه والحكمة فى خلقه .

٦٣ - فإن أعرضوا عن الحق بعد ماتبين لهم ، ولم يرجعوا عن ضلالاتهم فهم المفسدون ، والله عليم بهم .

٦٤ - قل - ياأيها النبى - يا أهل الكتاب تعالوا إلى كلمة عادلة جامعة تجرى بيننا ونذكرها على السواء ، وهى أن نخص الله بالعبادة ولا نجعل غيره شريكا له فيها ، ولا يطيع بعضنا بعضا وينقاد له فى تحليل شىء أو تحريمه ، تاركا حكم الله فيما أحلَّ وحرَّم ، فإن أعرضوا عن هذه الدعوة الحقة فقولوا لهم : اشهدوا بأنا منقادون لأحكام الله ، مخلصون له الدين لا ندعوا سواه .

٦٥ - ياأهل الكتاب لماذا تتنازعون وتجادلون فى دين إبراهيم : كل منكم يدعى أنه على دينه فى حين أن إبراهيم سابق فى الوجود على التوراة والإنجيل بشريعة خاصة ، وما أنزلت التوراة والإنجيل إلا من بعده ، فكيف يكون على شريعة واحدة منهما ؟ . أليست لكم عقول تدركون بها بطلان هذا الكلام الذى يناقض الواقع ؟

٦٦ - ها أنتم ياهؤلاء جادلتم فى أمر عيسى وموسى الذى لكم بهما معرفة - كما تزعمون - فكيف تجادلون فى كون إبراهيم يهوديا أو نصرانيا وليس لكم بذلك علم ؟ . والله يعلم حقيقة ما تنازعتم فيه ، وأنتم لا علم لكم بذلك .

62. Несомненно, что этот рассказ - истина. Ведь нет никакого божества, кроме Аллаха, Творца миров. Он - Единый, Великий в Своём царстве и мудрый в Своём творении!

63. Если они отвернутся от истины после того, как она стала им ясна, и не отвратятся от своих заблуждений, то Аллах знает распространяющих порчу!

64. Скажи (о пророк!): "О обладатели Писания! Приходите к справедливому слову, равному для вас и для нас, которое мы вместе с вами будем помнить, чтобы нам никому не поклоняться, кроме Аллаха, и никого не придавать Ему в сотоварищи. Мы не должны друг друга убеждать относительно разрешённого или запрещённого, минуя законы Аллаха, которым должны неукоснительно повиноваться". Если же они отвратятся от этого справедливого призыва Аллаха, то скажите им: "Засвидетельствуйте, мы - предавшиеся Аллаху, верны Его религии, ни к кому не обращаемся и никого не просим, кроме Него".

65. О обладатели Писания! Почему вы препираетесь о религии Ибрахима? Каждый из вас утверждает, якобы он следует его религии, хотя Ибрахим жил по своему шариату, а Тора и Евангелие были ниспосланы после него. Как же он мог быть последователем шариата одного из этих Писаний, ниспосланных только после него? Разве вы не разумеете, что то, что вы говорите, противоречит истине?

66. Вот, вы - те, кто препирается о том, о чём у вас есть знание, относительно Исы и Мусы; почему же вы препираетесь о том, о чём у вас нет знания - относительно Ибрахима. Он - иудей или христианин? Аллах знает истину того, из-за чего вы препираетесь, а вы не знаете!

مَا كَانَ إِبْرَٰهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَٰكِن كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿٦٧﴾ إِنَّ أَوْلَى ٱلنَّاسِ
بِإِبْرَٰهِيمَ لَلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُ وَهَٰذَا ٱلنَّبِىُّ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ۗ وَٱللَّهُ وَلِىُّ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾ وَدَّت طَّآئِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ
لَوْ يُضِلُّونَكُمْ ۖ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٩﴾ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَأَنتُمْ
تَشْهَدُونَ ﴿٧٠﴾ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تَلْبِسُونَ ٱلْحَقَّ بِٱلْبَٰطِلِ وَتَكْتُمُونَ ٱلْحَقَّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧١﴾ وَقَالَت طَّآئِفَةٌ مِّنْ

٦٧ - إن إبراهيم ــ عليه السلام ــ ما كان على دين اليهود ولا على دين النصارى ، ولكن كان منصرفا عن الأديان الباطلة إلى الدين الحق ، منقادا لله ، مخلصا فى طاعته وما كان من الذين يشركون مع الله غيره فى العبادة .

٦٨ - إن أحق الناس بالانتساب إلى إبراهيم ودينه للّذين أجابوا دعوته واهتدوا بهديه فى زمنه ، وكذا محمد ــ صلى الله عليه وسلم ــ ومن آمن معه ، فإنهم أهل التوحيد الخالص وهو دين إبراهيم ، والله يحب المؤمنين وينصرهم لأنهم أولياؤه ، ويجازيهم بالحسنى وزيادة .

٦٩ - إن فريقا من أهل الكتاب يتمنون إضلال المؤمنين وفتنهم عن دينهم ، بإلقاء الشبه التى توهن الاعتقاد ، وهم فى عملهم هذا لا يضلُّون إلا أنفسهم بإصرارهم على الضلال الذى يحيق بهم ــ وحدهم ــ ولا يعلمون أن عاقبة سعيهم هذا لاحقة بهم ولاتضر المؤمنين .

٧٠ - ياأهل الكتاب لم تكذّبون بآيات الله المنزلة الدالة على صدق نبوة ــ محمد صلى الله عليه وسلم ــ وأنتم تعلمون أنها حق ؟ .

٧١ - ياأهل الكتاب لم تخلطون الحق الذى جاء به الأنبياء ونزلت به الكتب بالشبهات الواهية ، والتأويلات الباطلة ، ولا تذيعون الحق صريحا واضحا بعيدا عن التخليط ، وأنتم تعرفون أن عقاب الله على مثل هذا الفعل عظيم ؟ .

67. Ибрахим - мир ему! - не был ни иудеем, ни христианином. Он только верил в религию Аллаха и шёл по прямому пути Аллаха, искренне повинуясь Ему. Он был ханифом, предавшимся Аллаху, и не был из многобожников.

68. Самые близкие к Ибрахиму и его религии те, которые за ним последовали, когда он был послан, и шли по прямому пути Аллаха, а также пророк Мухаммад - да благословит его Аллах и приветствует! - и те, которые уверовали вместе с ним в Аллаха. Они, как и Ибрахим, искренне признают единобожие. Аллах любит тех, которые уверовали, и помогает им. Аллах - Друг верующих! Он наградит их в последней жизни и введёт их в рай.

69. Некоторые из обладателей Писания хотели бы ввести верующих в заблуждение и совлечь их с прямого пути их веры. Но они сбивают только самих себя, не зная, что будет расплата за их скверное поведение, а верующим это не повредит.

70. О обладатели Писания! Почему вы опровергаете знамения Аллаха и ниспосланные Им айаты, доказывающие истинность пророчества Мухаммада - да благословит его Аллах и приветствует, - зная, что это - истина?

71. О обладатели Писания! Почему вы смешиваете Писания, ниспосланные пророкам, с явной ложью, не имеющей основания, и неверным толкованием? Почему вы скрываете истину, а не объявляете её открыто и ясно? Ведь вы знаете наказание Аллаха за такой большой грех!

أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ ءَامِنُوا۟ بِٱلَّذِىٓ أُنزِلَ عَلَى ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَجْهَ ٱلنَّهَارِ وَٱكْفُرُوٓا۟ ءَاخِرَهُۥ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤْمِنُوٓا۟
إِلَّا لِمَن تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ ٱلْهُدَىٰ هُدَى ٱللَّهِ أَن يُؤْتَىٰٓ أَحَدٌ مِّثْلَ مَآ أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَآجُّوكُمْ عِندَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ
ٱلْفَضْلَ بِيَدِ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِۦ مَن يَشَآءُ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾
* وَمِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ مَنْ إِن تَأْمَنْهُ بِقِنطَارٍ يُؤَدِّهِۦٓ إِلَيْكَ وَمِنْهُم مَّنْ إِن تَأْمَنْهُ بِدِينَارٍ لَّا يُؤَدِّهِۦٓ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ
عَلَيْهِ قَآئِمًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا۟ لَيْسَ عَلَيْنَا فِى ٱلْأُمِّيِّـۧنَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

٧٢ - وإن أهل الكتاب - فى سبيل إضلال المؤمنين - قالوا لإخوانهم : آمنوا بالقرآن الذى نزل على محمد واتبعه فيه المؤمنون أول النهار ، واكفروا فى آخره لعلكم تستطيعون بهذا فتنتهم ببث الريب والشك فيهم ، فيرجعون عن دينهم .

٧٣ - وقالوا أيضا : لا تذعنوا إلا لمن تبع دينكم ، خشية أن يدعى أحد أنه أوتى مثل ما عندكم ، أو يحتج عليكم بإذعانكم عند ربكم ، قل لهم - أيها النبى - إن الهدى ينزل من عند الله ، فهو الذى يفيض به ويختار له من يشاء ، وقل لهم - أيها النبى - إن الفضل من عند الله يعطيه من يريد من عباده ، وهو واسع الفضل ، عليم بمن يستحقه ومن ينزله عليه .

٧٤ - فهو يمنح من يشاء النبوة والرسالة ، ومن خصه بذلك فإنما هو محض فضله ، والله صاحب الفضل العظيم ، لاينازعه فيه غيره ، ولا يحجر عليه فى عطائه .

٧٥ - هذا سلوك أهل الكتاب فى الاعتقاد ، أما سلوكهم فى المال فمنهم من إن استأمنته على قنطار من الذهب أو الفضة أدَّاه إليك لاينقص منه شيئا ، ومنهم من إن استأمنته على دينار واحد لايؤديه إليك إلا إذا لازمته وأحرجته ، وذلك لأن هذا الفريق يزعم بأن غيرهم أميون ، وأنهم لاترعى لهم حقوق ، ويدعون أن ذلك حكم الله ، وهم يعلمون أن ذلك كذب عليه سبحانه وتعالى .

72. Некоторые из обладателей Писания, желая ввести верующих в заблуждение, говорят своим последователям: "Веруйте в Коран, ниспосланный Мухаммаду, в который уверовали те, которые следовали за ним; веруйте в начале дня и отрекитесь в конце его. Может быть, таким образом вы сможете внушить им сомнение, и они отрекутся от своей исламской религии!"

73. И добавляли: "Не верьте никому, кроме того, кто последовал за вашей религией, чтобы никто не претендовал на то, что ему было ниспослано подобное тому, что есть у вас". Скажи им (о пророк!): "Поистине, прямое руководство - руководство Аллаха. Он даёт его тому, кому пожелает. Скажи им также (о Мухаммад!): "Поистине, милость - от Аллаха. Он дарует её тому из Своих рабов, кому пожелает!" Ведь Аллах Всеобъемлющ, Милостив и знает, кто достоин милости и кому её даровать!

74. Аллах избирает, кого пожелает, пророком и посланником. Он отличает Своим милосердием, кого пожелает. Поистине, Аллах - Обладатель величайшей милости!

75. В предыдущих айатах было сказано о поведении обладателей Писания по отношению к вере, здесь говорится об их поведении по отношению к деньгам. Среди них есть те, кому, доверив кинтар золота или серебра, получишь всё полностью обратно, но есть и те, кому доверив один динар, не получишь его обратно, если не будешь всё время стоять над ними и настойчиво требовать от них. Это потому, что они думают, что другие, в отличие от них, - невежды, о правах которых не стоит заботиться, и утверждают, что это установление Аллаха. И возводят они на Аллаха Всевышнего ложь, хотя они знают об этом.

بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِۦ وَٱتَّقَىٰ فَإِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلْمُتَّقِينَ ﴿٧٦﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ ٱللَّهِ وَأَيْمَٰنِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُوْلَٰٓئِكَ
لَا خَلَٰقَ لَهُمْ فِى ٱلْءَاخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ ٱللَّهُ وَلَا يَنظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٧﴾
وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُۥنَ أَلْسِنَتَهُم بِٱلْكِتَٰبِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِندِ
ٱللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُؤْتِيَهُ ٱللَّهُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحُكْمَ
وَٱلنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا۟ عِبَادًا لِّى مِن دُونِ ٱللَّهِ وَلَٰكِن كُونُوا۟ رَبَّٰنِيِّـۧنَ بِمَا كُنتُمْ تُعَلِّمُونَ ٱلْكِتَٰبَ وَبِمَا كُنتُمْ
تَدْرُسُونَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَن تَتَّخِذُوا۟ ٱلْمَلَٰٓئِكَةَ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ أَرْبَابًا ۗ أَيَأْمُرُكُم بِٱلْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿٨٠﴾

٧٦ – حقا لقد افتروا على الله الكذب ، فإن من أدَّى حق غيره ووفَّاه فى وقته كما عاهده عليه وخاف الله فلم ينقص ولم يماطل فإنه يفوز بمحبة الله لأنه اتقاه(١) .

٧٧ – إن الذين يتركون عهد الله الذى عاهدهم عليه من أداء الحقوق والقيام بالتكليفات ، ويتركون أيمانهم التى أقسموا بها على الوفاء لثمن قليل من أعراض الدنيا مهما عظم فى نظرهم لا نصيب لهم فى متاع الآخرة ، ويُعرض عنهم ربهم ، ولا ينظر إليهم يوم القيامة نظرة رحمة ، ولا يغفر لهم آثامهم ، ولهم عذاب مؤلم مستمر الإيلام .

٧٨ – وإن من هؤلاء فريقا يميلون ألسنتهم فينطقون بما ليس من الكتاب ، محاولين أن يكون شبيها له ، ليحسبه السامع من الكتاب وما هو منه فى شىء ، ويَدَّعون أن هذا من عند الله وماهو من الوحى فى شىء وهم بهذا يكذبون على الله ، وهم فى أنفسهم يعلمون أنهم كاذبون .

٧٩ – وماكان معقولا ولا سائغا لبشر ينزل الله عليه الكتاب ، ويؤتيه العلم النافع والتحدث عن الله أن يطلب من الناس أن يعبدوه من دون الله .

ولكن المعقول والواقع أن يطلب منهم أن يكونوا خالصين لربهم الذى خلقهم بمقتضى ماعَلَّمهم من علم الكتاب وما يدرسونه منه .

٨٠ – ولا يمكن أن يأمركم بأن تجعلوا الملائكة أو النبيين أربابا من دون الله ، وإن ذلك كفر ليس من المعقول أن يأمركم به بعد أن صرتم مُسَلِّمين وجوهكم لله .

---

(١) توجب الآية الوفاء بالعهد ، وفى الوفاء بالعهد آيات أخرى سبقت منها (٢٧) من « سورة البقرة » ولقد اتهم الإسلام والمسلمون بأنهم لايرعون العهد ولا يعقدون معاهدة إلا لحاجة مؤقتة وينبذونها كلما حانت لهم الفرصة وقد مر الرد على هذه الفرية ، ومن جوامع كلم الإمام على بن أبى طالب ما ورد فى كتابه للأشتر النخعى – وإن عقدت بينك وبين عدوك عقدة أو ألبسته منك ذمة فحط عهدك بالوفاء ، وارع ذمتك بالأمانة واجعل نفسك جنة دون ما أعطيت فإنه ليس من فرائض الله شىء الناس أشد اجتماعا عليه مع تفرق أهوائهم من تعظيم الوفاء بالعهود فلا تغدرن بذمتك وتحنث بعهدك ..)

وحدث أن أحد قواد المسلمين رد إلى معاهديه الجزية التى اقتضاها عماله منهم لما أحس بعدم قدرته على الدفاع عنهم وكان ذلك شرطا من شروط العهد .

76. Поистине, они возводят на Аллаха ложь. Тот, кто честно вернёт долг заимодавцу в назначенное время, как договорились, боится Аллаха. Он не уменьшит занятую сумму и отдаст долг без всяких задержек и проволочек. Аллах его любит, потому что он богобоязнен, а Аллах любит богобоязненных!

77. Поистине, тем, которые не выполняют завета Аллаха о том, что нужно выплачивать долги и выполнять взятые на себя поручения и обязательства, и не сдерживают клятв, которые давали, обещая заплатить долг, ради ничтожной цены в быстротекущей жизни, какой бы огромной она ни казалась в их глазах, не будет блаженства в будущей жизни и не будет пощады в День воскресения. Господь не будет говорить с ними и не простит их грехи, и будет им мучительное наказание!

78. Среди них есть такие, которые искажают Писание и говорят то, чего в нём нет, стараясь говорить языком, похожим на язык Писания, чтобы слушатели сочли это за истинное Писание. Хотя на самом деле то, что они говорят, не из истинного Писания, они стараются убедить людей, что таковы слова Аллаха. Поистине, это не из Откровений Аллаха, и они возводят на Аллаха ложь, и сами знают об этом!

79. Не логично, что человек, которому Аллах ниспослал Писание и даровал полезные знания, мудрость и пророчество, сказал бы людям: "Поклоняйтесь мне вместо Аллаха!" А логично, чтобы он, получив Писание, которому он их учит и которое они стараются постичь, призывал бы людей быть благочестивыми и поклоняться одному Аллаху.

80. Не может быть, чтобы он приказал вам брать ангелов и пророков владыками помимо Аллаха. Разве он станет приказывать вам неверие после того, как вы стали верными мусульманами, предавшимися Аллаху?

وَإِذْ أَخَذَ ٱللَّهُ مِيثَٰقَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ لَمَآ ءَاتَيْتُكُم مِّن كِتَٰبٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِۦ
وَلَتَنصُرُنَّهُۥ ۚ قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِى ۖ قَالُوٓا۟ أَقْرَرْنَا ۚ قَالَ فَٱشْهَدُوا۟ وَأَنَا۠ مَعَكُم مِّنَ ٱلشَّٰهِدِينَ ﴿٨١﴾
فَمَن تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَٰسِقُونَ ﴿٨٢﴾ أَفَغَيْرَ دِينِ ٱللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُۥٓ أَسْلَمَ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ
وَٱلْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾ قُلْ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ أُنزِلَ عَلَىٰٓ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ

٨١ - واذكر لهم - أيها النبى - أن الله أخذ العهد والميثاق على كل نبى أنزل عليه الكتاب وآتاه العلم النافع ، أنه إذا جاءه رسول توافق دعوته دعوتهم ليؤْمِنُنَّ به وينصرنَّه . وأخذ الإقرار من كل نبى بذلك العهد ، وأقروا به وشهدوا على أنفسهم وشهد الله عليهم ، وبلغوه لأممهم أن ذلك العهد يوجب عليهم الإيمان والنصرة إن أدركوه وإن لم يدركوه ، فحق على أممهم أن يؤمنوا به وينصروه وفاء واتباعا لما التزم به أنبياؤهم .

٨٢ - فمن أعرض عن الإيمان بالنبى بعد هذا الميثاق المؤكد ، فهو الفاسق الخارج عن شرع الله ، الكافر بالأنبياء أولهم وآخرهم .

٨٣ - أيطلبون دينا غير دين محمد وهو دين الأنبياء وهو ــ وحده ــ دين الله ــ الذى خضع له كل من فى السموات والأرض طوعا بالإرادة والاختيار ، أو كرها بالخلق والتكوين ، وإليه ــ وحده ــ يرجع الخلق كله ؟ .

81. Скажи им (о Мухаммад!), что Аллах заключил договор и взял обет с каждого из пророков, которым Он ниспослал Писания, полезные знания и мудрость, сказав, что, если потом придёт к людям посланник, который подтвердит истинность того, что у них есть, они обязательно должны уверовать в него и поддержать его. Каждый пророк подтвердил этот договор и обет, данный Аллаху, и засвидетельствовал это, и Сам Аллах был свидетелем. Пророки сообщили своим общинам об этом договоре и о том, что по этому обету, они должны уверовать и помогать посланнику Аллаха, даже если он придёт после смерти предыдущих посланников, следуя по их стопам. Таким образом, их народы должны следовать за ними и уверовать в посланника Аллаха, выполнив договор своих пророков.

82. Кто отступит от веры в пророка Мухаммада - да благословит его Аллах и приветствует! - после этого правдивого договора и обета - неверные грешники, которые не уверовали в шариат Аллаха и в Его посланников, первых и последних.

83. Неужели они стремятся к другой религии - не религии Мухаммада? А ведь его религия - религия пророков, религия Единого Аллаха, которому предалось всё сущее в небесах и на земле добровольно и невольно! К Нему будет возвращено Его творение - всё, что в небесах, и всё, что на земле!

وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٨٤﴾
وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا
بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٦﴾ أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ
أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٨٧﴾ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٨﴾
إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٨٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوا

٨٤ - أكد الله وحدة الألوهية والرسالة ، فأمر نبيه ومن معه بأن يقولوا صدَّقنا بالله المعبود وحده ، ومرسل رسله ، وآمنا بما أنزل الله علينا من القرآن والشريعة ، وما نزَّله من كتب وشرائع على إبراهيم وإسماعيل وإسحاق ويعقوب وأولاده الأسباط الاثنى عشر ، وما أنزل الله على موسى من التوراة وعيسى من الإنجيل ، وما أنزل على سائر النبيين لا فرق فى الإيمان بين أحد منهم . ونحن بذلك قد أسلمنا وجهنا لله .

٨٥ - فمن يطلب بعد مبعث محمد ــ صلى الله عليه وسلم ــ دينا وشريعة غير دين الإسلام وشريعته فلن يرضى الله منه ذلك ، وهو عند الله فى دار جزائه من الذين خسروا أنفسهم فاستوجبوا العذاب الأليم .

٨٦ - إن الله لا يوفق قوما شهدوا بأن الرسول حق ، وجاءتهم الأدلة على ذلك ، ثم بعد ذلك كفروا به ، وبمعجزاته ، فكان ذلك ظلما منهم ، والله لا يوفق الظالمين .

٨٧ - أولئك عقوبتهم عند الله استحقاق غضبه عليهم ، ولعنته ، ولعنة صفوة الخلق جميعا من ملائكة وبشر .

٨٨ - لا تفارقهم اللعنة ، ولا يخفف عنهم العذاب ، ولا هم يمهلون .

٨٩ - لكن الذين أقلعوا عن ذنوبهم ، ودخلوا فى أهل الصلاح وأزالوا ما أفسدوا ، فإن الله تعالى يغفر لهم برحمته ذنوبهم ، لأن المغفرة والرحمة صفتان من صفات ذاته العلية .

84. Аллах подтвердил единство Божественности и Писания и повелел пророку Мухаммаду - да благословит его Аллах и приветствует! - и его последователям сказать: "Мы уверовали в Единого Аллаха, в Его посланников и в то, что ниспослано нам в Коране и шариате, и в то, что ниспослано Ибрахиму, Исмаилу, Исхаку, Йакубу и его потомкам - двенадцати коленам, и в Тору, ниспосланную Мусе, и в Евангелие, ниспосланное Исе, и во всё, ниспосланное другим пророкам от их Господа. Мы не делаем различия между ними, и этим мы предаёмся Аллаху!

85. После того, как Мухаммад - да благословит его Аллах и приветствует! - был избран Аллахом посланником, тот, кто выберет какую-нибудь другую религию, а не ислам и его шариат, вызовет недовольство Аллаха. И будет он в будущей жизни из тех, кто нанёс урон самому себе. И будет ему мучительное наказание.

86. Аллах не ведёт по прямому пути тех, которые сначала уверовали и свидетельствовали, что пророк Мухаммад - да благословит его Аллах и приветствует! - истинный пророк, и к ним пришли ясные знамения об этом, но после этого они отреклись от веры в него и в знамения Аллаха. Они совершили несправедливость, а Аллах не наставляет неправедных.

87. Аллах накажет этих людей. Воздаянием им будет гнев и проклятие Аллаха, ангелов и праведных людей!

88. На них будет вечное проклятие, и не будет смягчено им наказание, и не будет им отсрочки.

89. Кроме тех, которые оставили неверие и обратились к прямому пути Аллаха, раскаялись и творят добро. Аллах Всевышний милосердно простит их. Поистине, Аллах Прощающ, Милосерд!

كُفْرًا لَّن تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلضَّآلُّونَ ﴿٩٠﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَمَاتُواْ وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِم
مِّلْءُ ٱلْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ ٱفْتَدَىٰ بِهِۦٓ أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُم مِّن نَّٰصِرِينَ ﴿٩١﴾ لَن تَنَالُواْ ٱلْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُواْ
مِمَّا تُحِبُّونَ وَمَا تُنفِقُواْ مِن شَيْءٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٌ ﴿٩٢﴾ * كُلُّ ٱلطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ

٩٠ – وإن قبول التوبة والرحمة بالغفران شرطهما الاستمرار على الإيمان ، فالذين يجحدون الحق بعد الإذعان والتصديق ، ويزدادون بهذه الردة جحودا وفسادا وإيذاء للمؤمنين ، لن يقبل الله سبحانه وتعالى ــ توبتهم لأنها لا يمكن أن تكون صادقة خالصة ، وقد صاروا بعملهم بعيدين عن الحق منصرفين عنه .

٩١ – وإن الذين جحدوا الحق ولم يذعنوا له واستمروا عليه حتى وهم جاحدون ، لن يستطيع أحدهم أن يفتدى نفسه من عذاب الله ــ سبحانه وتعالى ــ شيئا ، ولو كان الذى يقدمه فدية له مايملأ الأرض من الذهب إن استطاع ، وعذابهم مؤلم شديد الإيلام .

٩٢ – لن تنالوا ــ أيها المؤمنون ــ الخير الكامل الذى تطلبونه ويرضاه الله تعالى ، إلا إذا بذلتم مما تحبون وأنفقتموه فى سُبُل الله المتنوعة ، وإن كان الذى تنفقونه قليلا أو كثيرا ، نفيسا أو غيره ، فإن الله يعلمه لأنه العليم الذى لايخفى عليه شىء فى الأرض ولا فى السماء .

90. Аллах принимает раскаяние и милосердно прощает тех, кто постоянно верует в Него. Но у тех, которые отреклись от Его Истины, после того как уверовали, потом усилились неверием и повредили верующим, Аллах Всевышний не примет покаяния, потому что их покаяние не может быть искренним. Поистине, они сознательно заблудились и отклонились от прямого пути Аллаха!

91. Те, которые отреклись от Истины Аллаха, не уверовали и умерли, будучи неверными, не смогут ничем выкупить себя и спастись от наказания Всевышнего Аллаха, даже если они смогут представить всё золото, которым наполнена земля. Для них будет мучительное наказание, и не будет у них защитников!

92. О верующие! Вы никогда не достигнете благочестия, к которому стремитесь и которым Аллах Всевышний будет доволен, пока не будете расходовать ради Аллаха из того, чем вы дорожите и любите. И чтобы вы не издержали из благ своих, Аллах знает об этом. Ведь Он Всеведущ, знает обо всём, что на земле и в небесах!